ISSN-0971-8443

बाल भारती

नवंबर 2020 मूल्य : ₹15

- संविधान
- बाल दिवस
- दीप जल उठे
- छठ

निकी और चंकी
ओह! निकी! तुम्हारी परीक्षा के बारे में पूछना था। कैसी हुई!
अच्छी हुई!
अभी तो परीक्षाएं भी ऑनलाइन हो रही हैं न!
और तुम्हारी कैसी हुई?
मेरी भी बहुत अच्छी हुई, मगर...
और वह मीकू तुम्हारा ही दोस्त है न! उसकी परीक्षा कैसी हुई?
उसकी परीक्षा तो बहुत खराब हुई निकी और उसे टीचर जी ने बहुत डपट लगाई!
अच्छा! ऐसी क्या बात हो गई!? क्या वह चोरी करते पकड़ा गया या...
या वह किसी की मदद कर रहा था?
ऐसा कुछ भी नहीं है निकी! उसने तो पूरी कॉपी सादी ही छोड़ दी थी!...और परीक्षा की तारीख भी गलत लिखा था!
टीचर जी ने इसलिए डपट लगाई कि फेल होने के लिए भी कम-से-कम तारीख तो सही लिखनी होगी न!
क्या?
समाप्त.

बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 73 : अंक : 6 पृष्ठ : 56 कार्तिक-अग्रहायण 1942 नवंबर 2020

लेख

संविधान	सुभाष सी. कश्यप	13
छठ	श्वेता	41

कहानियां

बाल दिवस	प्रकाश मनु	6
दीप जल उठे	सुधा गुप्ता 'अमृता'	16
अधिकार की लड़ाई	चन्दन कुमार चौधरी	20
खुशियों भरी दीवाली	पूनम मेहता	26
कुम्हार की दीवाली	मंजरी शुक्ला	34
दादी की पार्टी	मोनिका गुप्ता	38
नई शुरुआत	प्रियंका	44
खुशियों के दीप	सावित्री चौधरी	47
रामू की सेल्फी	कुसुम अग्रवाल	49

महान कवि : महान कविताएं

दीप से दीप जले	माखनलाल चतुर्वेदी	28

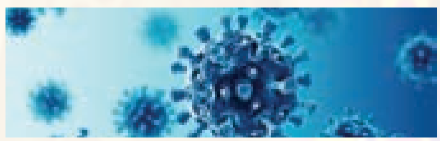

कविताएं

तारों की दुनिया	श्रवण कुमार सेठ	25
कोरोना के संग जीना	नरेन्द्र सिंह नीहार	37
वयोवृद्ध ज़िंदगानियां	ध्रुव सहगल	40
बिट्टू राजा हठ कर बैठे	किरण सिंह	54

चित्रकथा

विश्व विरासत सप्ताह	30-33
मेथी	52-53

प्रधान संपादक : **धीरज सिंह**
वरिष्ठ संपादक : **आभा गौड़**
दूरभाष : 011-24362910

उत्पादन अधिकारी : **के. रामालिंगम**
आवरण : **राजिन्द्र कुमार**
चित्रांकन : **अनूशा सलाम, शिवानी, प्रज्ञा उपाध्याय, गुंजन द्विवेदी**

पत्रिका न मिलने की शिकायत अथवा **बाल भारती** की सदस्यता लेने या पुराने अंक मंगाने के लिए *pdjucir@gmail.com* पर ईमेल करें या संपर्क करें- दूरभाष 011-24367453 (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: 9:30 बजे से शाम 6:00 बजे तक)

पत्राचार का पता : गौरव शर्मा, संपादक, पत्रिका एकांश प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 56, भूतल, सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*
वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*
फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :
व. संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

नटखट मन की चंचल माया
नन्ही मुट्ठी में चांद समाया
नन्हे पैर धरती न जाने
परियों की दुनिया, सपनों की रातें
खिलखिलाता-गुनगुनाता
अहसास है बचपन
हम सब में जीता-धड़कता
हमारा अपना बचपन।

नन्हे साथियों को बाल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं! तुम हो तो मेरे होने की सार्थकता है और उसी तरंग के साथ-साथ मेरा सदाबहार बचपन गुलजार है। इस बार तो बाल दिवस, दीपावली, गोवर्धन, भैयादूज, छठ, सभी त्योहार साथ-साथ आ रहे हैं। घर में उत्सव का माहौल रहेगा। एक त्योहार के कुछ दिन बाद दूसरे की तैयारी। खूब सारे उपहार, नए कपड़े, खाना-पीना, मौज-मस्ती सभी कुछ रहेगा। दिन में ऑनलाइन कक्षाएं और शाम को आने वाले त्योहारों की साफ-सफाई, सजावट, सब की तैयारी में दिन कटेंगे। पर बाल दिवस या अन्य त्योहार मनेंगे कैसे? कोरोना संकट!

बाल दिवस पर स्कूल और आस-पास के मित्रों और उनसे जुड़े कार्यक्रमों की कमी तो खलेगी किंतु फोन, वीडियो कॉल और सोशल मीडिया ने तो दूरी भी पाट दी है। मुझे पता है कुछ-न-कुछ कार्यक्रम तो तुम लोग बना ही लोगे और इन माध्यमों की सहायता से उसका भरपूर आनंद भी उठाओगे। बच्चे जो कर जाएं कम है। उनका 'क्रिएटिव माइंड' हर समस्या का मजेदार सा हल निकाल ही लेता है। बाकी अन्य त्योहार भी मनाए जाएंगे। घर के भीतर वही सब परंपरागत रस्में, खान-पान, रंगोली, दियों की सजावट और पारंपरिक पूजाएं हमेशा की तरह सब होंगी, घर के सभी सदस्यों के परस्पर सहयोग के साथ।

बच्चो यदि शरीर और मन स्वस्थ है, आपके कार्य सुचारू रूप से चल रहे हैं और परिवार साथ है तो जीवन का हर दिन उत्सव है। सोशल डिस्टेंसिंग रखकर, मास्क पहनकर तथा साफ-सफाई का ध्यान रखकर इन त्योहारों का भरपूर आनंद उठाया जा सकता है। दीपावली, छठ, ओणम जैसे अन्य सभी पर्वों में स्वच्छता की महत्ता को समझकर उसे प्राथमिकता दी जाती है। घर-आंगन और आस-पास की स्वच्छता के बाद ही पूजन तथा अन्य पारंपरिक रस्में की जाती हैं। यह मान्यता ही नहीं अपितु वैज्ञानिक सत्य है कि रोग भगाने और स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता महत्वपूर्ण कारक है। इस मौसम में स्वच्छता के माध्यम से कोरोना ही नहीं डेंगू, मलेरिया या अन्य बिमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

बच्चो कोरोना जैसी महामारी से बचने के लिए कितने समय से आप स्कूल न जा सभी घर में बैठे हो और मित्रों तथा अपने सगे-संबंधियों से दूर हो। दीपावली में पुनः अवसर मिला है स्वच्छता का दामन पकड़ कर कोरोना मुक्त होने का संकल्प लेने का। इस बार कोरोना भगाएंगे- अगला बाल दिवस और दीपावली मिलकर मनाएंगे। इसी शुभकामनाओं के साथ- आपकी अपनी बाल भारती।

आपकी बात

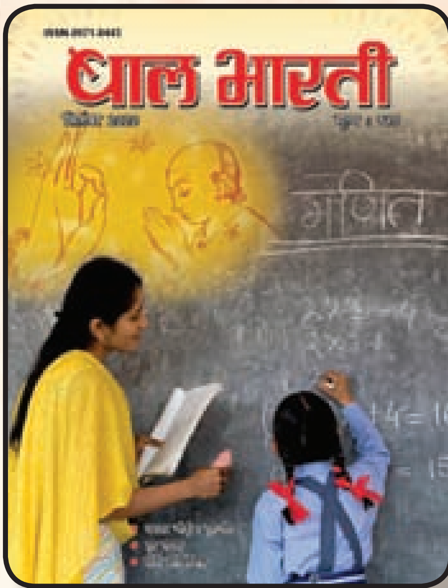

गुरु शिष्य परम्परा मात्र परंपरा नहीं है अपितु मानव विकास शृंखला का महत्वपूर्ण आधार है। जिसके माध्यम से आज हम हर क्षेत्र में प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। गुरु अपनी क्षमताओं और समस्त जानकारियों को अपने शिष्यों तक पहुंचाता है और शिष्य उन्हें अपने व्यक्तित्व में आत्मसात कर उन्हें विस्तार देता है। हर नई पीढ़ी को मौका मिलता है पुरानी पीढ़ी से आगे जाने का और इसमें सम्मानजनक स्थिति यह है कि शिष्य यह भाव समझता है और सम्मान के साथ गुरु के गौरव का मान रख न उन्हें सिर्फ श्रेय देता है अपितु उनका गौरव बढ़ाता है। एक समय यह भी आता है कि ये दोनों एक-दूसरे के पर्याय बन जाते हैं और उनकी अद्‌भुत जोड़ी अद्‌भुत मिसाल कायम करती है। *बाल भारती* पूरी निष्ठा से गुरु-शिष्य के समर्पण और प्रेम भाव को सदैव गौरवान्वित करती रही है। इस अंक में इस गौरवशाली परंपरा को पुनः सम्मानित किया गया है। *बाल भारती* सितंबर 2020 अंक के लिए संपादकीय टीम को शुभकामनाएं और धन्यवाद।

–विधान शुक्ला, बनारस, उ.प्र.

बाल भारती सितंबर अंक रोचक और पठनीय है। सरल-सहज भाषा में *हमारी बात* मन को छू गई। बच्चे यदि सफल और सुशिक्षित हों तो माता-पिता के प्रेम और मेहनत को सभी श्रेय देते हैं किंतु बच्चों को सदैव दिशा-निर्देश देने वाले गुरु अथवा अध्यापकों को प्रायः भूल जाते हैं। जबकि हर बच्चे के मन में उसके अध्यापक अपना एक विशेष कोना बना लेते हैं और बच्चे कब उनसे किस बात पर प्रभावित हो अपने जीवन का उद्देश्य चुन लेते हैं, इसका पता भी नहीं चलता। हर बच्चे के मन में उसके गुरु बसते हैं। इसलिए जब वह बड़ा होकर, कुछ बनकर उभरता है तो एक बार मन से अपने गुरुओं को अवश्य याद करता है और उन्हें मिलकर अपनी सफलता का श्रेय देना चाहता है। गुरु-शिष्य परम्परा को सादर प्रणाम!

–दिवाकर पंत, भोपाल, म.प्र.

बाल भारती सितंबर अंक अपनी विविधता और रोचक प्रस्तुतिकरण के लिए सराहनीय प्रयास रहा। *दमदार जोड़ी-गुरु शिष्य* लेख जानकारीपरक था। कहानियां *अंगूठाछाप होने का दर्द, हिंदी प्रतियोगिता, मोनाल, चिड़ियों का खेत* अच्छी लगीं। कविता *चिड़े-चिड़ी की शादी* ये मनोरंजक लगी। महान कवियों की कविताएं प्रकाशित कर साहित्यिक विरासत से परिचित कराने के लिए *बाल भारती* को धन्यवाद। कृपया प्रसिद्ध लेखकों जैसे मुंशी प्रेमचंद, आशापूर्णा देवी, शरदचंद आदि की भी बाल कहानियां कभी-कभी *बाल भारती* में प्रकाशित करें।

–अमित वर्मा, मालवीय नगर, नई दिल्ली

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें।
आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

बाल दिवस

—प्रकाश मनु

बाल दिवस आने को था। कॉलोनी के सारे बच्चे उत्साहित थे। इसलिए भी कि भुल्लन चाचा ने कहा था कि इस बार हम अपनी कॉलोनी में बाल दिवस मनाएंगे और वह भी ऐसे बढ़िया ढंग से कि लोग याद करें।

सरोजिनी विहार कॉलोनी में पहली बार बाल दिवस मनाया जा रहा था। वह भी भुल्लन चाचा की बदौलत, जो सच्ची-मुच्ची धुन के पक्के थे। कुछ दिन पहले गांव से आए थे, तो बड़े बुद्धू से लगते थे। हर कोई उनकी हंसी उड़ाता। पर जल्दी ही उन्होंने पूरी कॉलोनी के बच्चों पर अपना रोब जमा दिया था।

फिर वह खुशमिजाज भी इतने थे कि उनके पास बैठो तो सारे बच्चे हंसते-हंसते एकदम हंसी का गुब्बारा बन जाते थे। इसीलिए भुल्लन, जो निक्का और गौरी के चाचा थे, अब सारी कॉलोनी के बच्चों के लिए भुल्लन चाचा बन गए थे।

भुल्लन चाचा का बाल दिवस मनाने का आइडिया भी ऐसा था, जिसने कॉलोनी के सारे बच्चों में जोश भर दिया था।

''पर...तुम लोगों ने सोचा है कुछ कि बाल दिवस कैसे मनाया जाए?'' भुल्लन चाचा ने कुछ गंभीर होकर कहा, ''कुछ तुम लोग भी सुझाओ, भई। सब लोग अपना-अपना आइडिया बताएं।''

''चाहे जैसे भी मनाएं भुल्लन चाचा, पर मनाएं ऐसे कि बस, धूम मच जाए!'' नन्ही छुटकी ने ही-ही हंसते हुए कहा।

''पर धूम मचे कैसे, यह भी तो पता चले...? क्या बाल दिवस पर हम लोग नाचते-गाते हुए पूरी कॉलोनी की परिक्रमा करें, इससे धूम मचेगी?'' भुल्लन चाचा ने जानना चाहा।

"न...न...न...!" सब बच्चे हंसे, "ऐसा नहीं भुल्लन चाचा...!" "तो क्या करें...? कुछ सोचना तो पड़ेगा न!" भुल्लन चाचा ने हथेली से अपने माथे को रगड़ा। उनका माथा कुछ-कुछ लाल सा हो गया। मगर सवाल तो अब भी अपनी जगह था कि बाल दिवस कैसे मनाएं? "हां, सोचना पड़ेगा...!" थोड़ा गंभीर होकर अशरफ बोला। साथ ही और बच्चे भी। "तो कुछ सोचो। सोचकर बताओ...!" भुल्लन चाचा ने मामले पर थोड़ा जोर देकर कहा।

"अच्छा, हम लोग एक प्रोग्राम रख लें, उसमें बच्चे अपनी-अपनी कोई कला दिखाएं। कोई गाना सुनाए, कोई कहानी, कोई चुटकुला... कोई कुछ और...! कैसा रहेगा?" निक्का का आइडिया।

"हां, हो तो सकता है।" सबने कहा, "पर...ज्यादा मजा नहीं आएगा।" भुल्लन चाचा को भी ज्यादा तसल्ली नहीं हुई। बोले, "बात तो ठीक है, पर कुछ और भी होना चाहिए।" "तो भुल्लन चाचा, एक नाटक भी रख लेते हैं। उसमें बचपन के बारे में मजेदार ढंग से बात की जाए। अब देखो ना, ये बड़े लोग बच्चों को बात-बात पर डांटते हैं। हमेशा पढ़ो-पढ़ो, पढ़ो! इसके अलावा कोई बात ही नहीं। अरे भई, जरा बच्चों को भी तो अपने

ढंग से खेलने-कूदने और काम करने की आजादी होनी चाहिए!" "बहुत अच्छा...बहुत अच्छा!" भुल्लन चाचा ने सिर हिलाया। बोले "आइडिया अच्छा है, पर नाटक लिखेगा कौन...?" "देबू लिख सकता है। उसने पिछली साल स्कूल की पत्रिका में भी एक नाटक लिखा था, 'मुसीबत चंदू की'। वह चाहे तो बाल दिवस पर भी बढ़िया सा नाटक लिख सकता है।" चिंकी ने समझाया।

"क्यों देबू...?" भुल्लन चाचा ने देबू पर निगाहें गड़ा दीं। "हां ठीक है भुल्लन चाचा!" देबू कुछ सोचता हुआ बोला, "पर सब लोग थोड़ी-थोड़ी मदद करें तो...!" "मदद...! कैसी मदद...?" भुल्लन चाचा ने जानना चाहा।

"असल में बात क्या है, भुल्लन चाचा...!" देबू ने कहा, "कि वह नाटक जो पिछले साल स्कूल की पत्रिका में छपवाया था, वह तो जैसा भी मन में आया, मैंने लिखकर दे दिया, और वह छप भी गया।...पर यह नाटक तो मोहल्ले के इतने सारे लोगों के सामने होगा। इतने सारे अंकल और आंटियां देखेंगी।...तो मुझे लगता है, संवाद खासे जोरदार होने चाहिए। मैं सारे दोस्तों से संवाद बुलवाकर देखूंगा और जरूरत हुई तो उन्हें बदलूंगा भी, ताकि नाटक के संवाद एकदम फड़कते हुए हों।...और हां, भुल्लन चाचा, हम इतने सारे लोग मिलकर लिखेंगे नाटक, तो विचार भी कितने सारे आएंगे। फिर तो नाटक बनेगा ही जोरदार! क्यों, है ना?"

"ठीक है, ठीक...! तुम सत्ते, गोविंदा, छुटकी, चिंकी, संजू, अशरफ और परमिंदर की मदद ले लेना। और ये ही लोग नाटक के कलाकार भी बन जाएंगे। चाहो तो किसी एक को और ले लो।... मेरे खयाल से तन्ना ठीक रहेगा। थोड़ा चंचल सा है, नाटक में मजा बांध देगा। और चिंकी को कोई हंसी-मजाक वाला रोल देना। ये ऐसा बढ़िया करेगी कि लोग हंसते-हंसते पागल हो जाएंगे...!" भुल्लन चाचा हंसते हुए बोले। फिर एकाएक सब बच्चों की ओर मुड़कर बोले, "क्यों, तुम लोग देबू की मदद करोगे ना?"

"हां भुल्लन चाचा, बिल्कुल!"

सब बच्चों ने खुशी के मारे उछलकर कहा। असल में किसी नाटक से जुड़ने का उनका यह पहला मौका था। तो खुशी तो होनी ही थी। सबके मन में उमंग थी कि कुछ करके दिखा दें।

''तो फिर ठीक है, पक्का रहा बाल दिवस का कार्यक्रम...!'' भुल्लन चाचा ने कहा, ''हां, उस दिन कौन क्या-क्या कार्यक्रम पेश करेगा, यह भी बता देना, ताकि पहले से सब कुछ तय हो जाए कि कौन क्या सुनाएगा। कौन पहले सुनाएगा, कौन बाद में...?''

''और हां, मैं समझता हूं, एक सहगान भी होना चाहिए कार्यक्रम के अंत में।'' भुल्लन चाचा ने सुझाया, ''कुछ बच्चे मिलकर सहगान पेश करें तो बड़ा अच्छा लगेगा।

''ठीक है, भुल्लन चाचा...!'' बच्चों ने खुशी प्रकट की।

''हां, पर...!'' भुल्लन चाचा किसी उधेड़बुन में थे। बोले, ''कुछ अलग सी चीज और होनी चाहिए।''

''भुल्लन चाचा, आइडिया...!'' चिंकी उछलकर बोली, ''जैसे दीवाली पर मेला लगाया जाता है, ऐसे ही हम बाल मेला लगाएं। मोहल्ले के सेंट्रल पार्क में बच्चे दुकानें लगाएं। बड़े लोग आएंगे, खरीदेंगे तो कितना अच्छा लगेगा।''

भुल्लन चाचा खुश होकर बोले, ''बहुत अच्छा आइडिया है, चिंकी। पर इसमें जो कुछ करना है, बच्चे ही करें, और अपने बूते करें। किसी और की मदद न लें। ताकि सब लोगों पर असर पड़े कि बच्चे चाहें तो क्या नहीं कर सकते...!''

''पर हम अपने भैया या दीदी की थोड़ी-थोड़ी मदद तो ले सकते हैं ना, भुल्लन चाचा?'' तन्ना ने पूछा।

''बिल्कुल मदद ले सकते हैं, पर बाकी सारे काम खुद करें। तभी तो मनेगा बाल दिवस...!'' भुल्लन चाचा मुस्कुराए। फिर कहा, ''खाने-पीने की चीजें चाहें तो मम्मी से बनवाकर ले आएं। पर दुकान खुद सजाएं। और मिलकर एक-दूसरे की हिम्मत बढ़ाएं।''

''हां-हां, यह ठीक है...!'' सब बच्चों ने एक साथ कहा।

''तो ठीक है, करते हैं तैयारी।'' भुल्लन चाचा बोले, ''अभी तो पूरे दस दिन बाकी हैं। मेरे खयाल से कर लेंगे सब लोग।..हां, देबू, तुम फटाफट नाटक लिखो, क्योंकि उसकी रिहर्सल में भी काफी समय लगेगा।

''भुल्लन चाचा, मैं परसों लिखकर दे दूंगा आपको...!'' देबू ने उत्साहित होकर कहा।

''तो ठीक है, परसों फिर मिला जाए...! कौन बच्चा क्या कार्यक्रम पेश करेगा, सोचकर आए। उसकी पूरी लिस्ट बनाई जाएगी।...और परसों से ही नाटक और बाकी कार्यक्रमों का अभ्यास शुरू।

''वव्वाह...!'' बच्चे चिल्लाए और फिर सब अपने-अपने घर की ओर भागे।''

अगले दिन से ही बाल दिवस की जोरदार तैयारियां शुरू हो गईं।

सत्ते ने एक कविता लिखी थी, 'हम बच्चे हिंदुस्तान के'। परसों तक इंतजार करना उसे मुश्किल लग रहा था, इसलिए झट दौड़ता हुआ भुल्लन चाचा के घर पहुंच गया। जल्दी से बोला, ''देखो-देखो भुल्लन चाचा, मेरी कविता...!''

भुल्लन चाचा ने कविता पढ़ी, तो उनका जी खुश हो गया। चेहरे पर चमक। वाकई सत्ते ने मेहनत की थी। उसकी कुछ लाइनें तो बड़ी ही अच्छी थीं। भुल्लन चाचा ने कहा तो सत्ते ने झटपट पढ़कर सुना दी कविता-

हम बच्चे हिंदुस्तान के...!
भारत नया बनाएंगे हम
कण-कण को चमकाएंगे हम,
छू आएंगे चांद-सितारे
मंगल पर हो आएंगे हम।
अपनी पर आ जाएं तो सच
दुनिया नई बसाएंगे हम।
हिम्मत वाले, फौलादी हम
बच्चे हिंदुस्तान के...!

भल्लन चाचा बोले, ''बस,

सत्ते, तुम्हारी इसी कविता को ही सहगान के रूप में पेश किया जाएगा। इसमें बाल दिवस का आइडिया भी है कि बच्चे चाहें तो क्या नहीं कर सकते। क्यों, ठीक है ना...!''

''हैं भुल्लन चाचा, सच...?'' सत्ते को यकीन नहीं हो रहा था।

''सच...!'' भुल्लन चाचा हंसे और प्यार से सत्ते का कंधा थपथपा दिया।

अशरफ ने भी एक सुंदर सी कविता लिखी थी। उसकी चार लाइनें भुल्लन चाचा को बहुत पसंद आईं।

बच्चे जहां, वहीं तो खिलते
मुस्कानों के फूल,
बच्चों के संग खुशियां सारी,
मत जाओ यह भूल...!

इसके अलावा और बच्चों ने भी अलग-अलग कार्यक्रमों की तैयारी की। किसी ने किस्सा-कहानी सुनाने की तैयारी की थी, तो किसी ने मोनो प्ले की। एक-दो बच्चों ने गाना सुनाने की भी प्रैक्टिस शुरू कर दी थी। गौरी ने कुचिपुड़ी नृत्य दिखाने की तैयारी कर ली थी।

उधर देबू के नाटक की भी जोरदार तैयारियां चल रही थीं। उसमें देबू ही नहीं, सत्ते, गोविंदा, छुटकी, चिंकी, अशरफ, संजू, परमिंदर और तन्ना सब डूबे हुए थे। लग रहा था, कुछ ऐसा होने वाला है, जैसा पहले कभी नहीं हुआ।

निक्का अपने मोनो प्ले की जोरदार तैयारी में जुटा था और गौरी कुचिपुड़ी नृत्य के अभ्यास में। पर नाटक में तो सबकी रुचि थी। सभी को कोई न कोई रोल उसमें मिला था। निक्का और गौरी को भी। वे रोज भुल्लन चाचा को बताते कि नाटक में क्या-क्या नई बातें हो रही हैं। सुनकर भुल्लन चाचा खुश होकर कहते ''वाह...!'' पर साथ ही चेता भी देते, ''ध्यान रखना तुम लोग। नाटक हमारे बाल दिवस का सबसे मुख्य आइटम है, उसमें कोई कोर-कसर न रह जाए।

''सच्ची भुल्लन चाचा, बिल्कुल ऐसा ही है नाटक। एकदम फर्स्ट क्लास...!'' निक्का और गौरी कहते तो भुल्लन चाचा का चेहरा खिल जाता।

तीसरे दिन बच्चा पार्टी मिलकर बाल दिवस की तैयारियों की फेहरिस्त पेश कर रही थी, तभी अचानक भुल्लन चाचा बोले, ''हां तो देबू, जरा देखें आज, तुम लोगों ने कैसी रिहर्सल की है। तैयार हो ना? आज हम सब लोग मिलकर देखेंगे तुम्हारा नाटक...!''

''हां-हां, भुल्लन चाचा, आप लोग देखिए और कोई कमी है तो बताइए!'' कहकर देबू ने रिहर्सल की तैयारी शुरू कर दी। सत्ते, गोविंदा, अशरफ, छुटकी, चिंकी, परमिंदर और तन्ना समेत सारे कलाकार देखते ही देखते व्यस्त हो गए। और फिर एकाएक नाटक शुरू। बिना ड्रेस की रिहर्सल...!

भुल्लन चाचा ने नाटक देखा तो मुग्ध हो गए। बोले, ''वाह देबू, वाह!''

''सच देबू, तुमने जमा दिया रंग। मुझे यह तो लग रहा था नाटक बढ़िया होगा, पर इतना बढ़िया होगा, मुझे भी इसका अंदाजा नहीं था।...हां, संवादों पर थोड़ी और मेहनत करो। संवाद ही

तो इस नाटक की जान हैं!''

देबू ने सिर हिलाया, ''ठीक है भुल्लन चाचा, आप देखना, नाटक में कोई कोर-कसर हम लोग नहीं रहने देंगे।''

और फिर बाकी चीजों की प्रैक्टिस।...एक के बाद एक आइटम। मोनो प्ले, कविता, नृत्य, संगीत, हास्यकथा...! सबके दिल में एक ही उमंग कि कार्यक्रम जोरदार होना चाहिए। जोश बच्चों के दिल में समा नहीं रहा। और बाल दिवस वाले दिन तो बच्चे सुबह से ही इस कदर तैयारियों में डूबे थे कि किसी को कुछ होश ही नहीं था।

कुछ बच्चे टैंट लगवाने में मदद कर रहे थे। कुछ अपने छोटे-छोटे स्टाल सजा रहे थे। कुछ अपने-अपने कार्यक्रम की तैयारी में व्यस्त थे। कुछ पूरे सभामंडप को अपनी सुंदर कला से सजाने में जुटे थे। सभामंडप के सामने बड़ी खूबसूरत रंगोली भी बनाई गई थी।

शाम चार बजे तक बच्चों की तरह-तरह की दुकानें सज गई थीं। किसी ने खाने-पीने का सामान रखा था, तो कुछ ने तरह-तरह के खिलौने और दूसरी सजावटी चीजें। कुछ गुब्बारे बेच रहे थे तो कुछ सुंदर गुड्डे-गुड़ियां। कुछ बच्चों ने अपने हाथ से मिट्टी के सुंदर खिलौने बनाए थे और उन्हें सुंदर रंगों से रंगा था। कुछ ने रंग-बिरंगे चित्र और कार्टून। वे दुकान लगाकर अपनी बनाई कलाकृतियां बेच रहे थे।

यों उस बाल मेले में तरह-तरह की दुकानें थीं। एक से एक सुंदर दुकानें। हर दुकान बच्चे की एक अलग दुनिया की कहानी कहती थी और इस बाल मंडप के बाहर एक बड़ी सी ड्राइंग शीट पर खूबसूरत अक्षरों में लिखा था, ''स्वागतम...!''

थोड़ी देर बाद कॉलोनी के लोग आने लगे।...

मेले में ऐसे रंग तमाम थे, जो मेले को और मजेदार बना रहे थे।

कर्नल दुआ साहब सरोजिनी विहार कॉलोनी की एसोसिएशन के अध्यक्ष थे। बड़े ही खुशमिजाज और हर किसी की मदद करने वाले। बच्चों ने दो दिन पहले उनसे भी कार्यक्रम में आने के लिए कहा था। इस पर उन्होंने हंसते हुए कहा था, ''तुम जैसे प्यारे-प्यारे बच्चे बुलाएं तो भला कैसे न आऊंगा? मैं जरूर आऊंगा, बल्कि अपने साथ और भी बहुत से लोगों को लेकर आऊंगा।''

और सचमुच हुआ भी यही। दुआ साहब आए तो उनके साथ एसोसिएशन के और सदस्य भी थे। साथ ही कॉलोनी के कुछ बड़े-बुजुर्ग भी। सभी बड़े चाव से मेला देख रहे थे और खूब खुश होकर बच्चों की तारीफ कर रहे थे।

कुछ लोग यह देखने आए थे कि उनके बच्चों ने कैसी दुकान सजाई है या कि आज वे क्या कार्यक्रम पेश करने वाले हैं। वे इधर-उधर निगाहें घुमाकर अपने बच्चों को तलाश रहे थे। बच्चे दौड़कर आते, उन्हें मेला घुमाते हुए अपने मित्रों और परिचितों से मिलवाते। हर ओर हंसी-खुशी और मुस्कानें।

सचमुच एकदम नया-नया सा माहौल था।

बच्चों को बहुत मजा आ रहा था। वे घर के लोगों और दोस्तों को बता रहे थे कि कितनी मेहनत से खुद उन्होंने चीजें तैयार कीं और फिर दुकानों पर सजाया। अच्छी-खासी खरीदारी भी हो रही थी।

कुछ देर बाद मंच पर कार्यक्रम शुरू हुआ। सामने पचास-साठ कुर्सियां तरतीब से लगी थीं। कार्यक्रम के संचालन का जिम्मा खुद भुल्लन चाचा ने संभाला।

उसके बाद एक से एक सुंदर कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हुआ। एक बच्चे के भारी बस्ते को लेकर निक्का का मोनो प्ले ऐसा जोरदार था कि देखने वाले वाह-वाह कर उठे। गौरी का कुचिपुड़ी नृत्य भी कमाल का था। इसके बाद परमिंदर ने सुनाई फुदकू मेंढक की हंसते-हंसते लोटपोट कर देने वाली हास्यकथा। छुटकी के एक से एक मजेदार

चुटकुले सुनाए और गोविंदा ने इकतारे पर गाना गाया। अशरफ की कविता ने भी रंग जमाया।...

इसके बाद शुरू हुआ देबू का नाटक, जिसका सबको इंतजार था। नाटक का शीर्षक था, 'बच्चों की मुसीबत'। उसमें बच्चे मिलकर एक-दूसरे को अपने-अपने घर की कहानी बताते हैं कि आज किसको डांट पड़ी, किसे बिना बात गुस्सा और फटकार झेलनी पड़ी, किसे खेलने के लिए मना किया गया...! सुनकर बच्चे बड़े अफसोस में हैं और सोचते हैं कि किस तरह बड़ों की ज्यादतियां खत्म हों।

आखिर बच्चों की एक कचहरी लगती है, जिसमें बड़ों को बुलावाया गया। उन पर मुकदमा चला कि उन्होंने क्यों बिना बात बच्चों को तंग किया। बड़ों को अपनी गलती माननी पड़ी और उन्होंने कहा कि आगे से हम बिना बात डांटेंगे नहीं। बच्चे कोई गलती करें, तो उन्हें प्यार से समझाएंगे। फिर एक-एक कर बच्चे सामने आए। उन्होंने कहा कि हम रोज समय से पढ़ाई-लिखाई करेंगे। लेकिन उसके बाद हम खेलें-कूदें या नाटक की तैयारी करे तो कोई हमें रोके-टोके नहीं...! बीच-बीच में जज बनी चिंकी की बड़ी ही मजेदार बातें

सुनकर सब हंसते-हंसते लोटपोट हो रहे थे।

आखिर खुशी-खुशी सब एक-दूसरे की बात मान जाते हैं। और यों नाटक हंसी-खुशी खत्म हुआ, तो दर्शकों ने देर तक तालियां बजाकर उसका स्वागत किया। अंत में सत्ते की कविता पर हुए प्यारे सहगान ने तो सबका मन मोह लिया।

कार्यक्रम खत्म हुए तो पुरस्कार समिति ने पुरस्कारों की घोषणा की। पहला पुरस्कार देबू के नाटक 'बच्चों की मुसीबत' को ही मिला, जिसने बच्चों-बड़ों, सबके दिल को छू लिया था। दूसरा पुरस्कार सत्ते और उसके साथियों को सहगान के लिए मिला। तीसरा पुरस्कार गौरी को अपने कुचीपुड़ी नृत्य के लिए मिला।

उसके बाद सभा का समापन होना था। पर भुल्लन चाचा को अचानक कुछ सूझा। बोले, "दोस्तो, अब एक निराला कार्यक्रम होगा, और यह आज के बाल दिवस का सबसे बढ़िया कार्यक्रम होगा।...अब तक सारे कार्यक्रम बच्चों ने किए। पर अब बड़े करके दिखाएंगे और बच्चे उसका आनंद लेंगे। कार्यक्रम का नाम होगा, 'हम भी तो बच्चे हैं'...! इसमें बड़े लोग अपने बचपन का कोई ऐसा मजेदार प्रसंग सुनाएंगे, जिसे सुनकर सबको हंसी आ जाए। तो पेश है यह अनोखा कार्यक्रम, 'हम भी तो बच्चे हैं'!...हां, तो कर्नल साहब, शुरुआत आपसे होगी। आइए, मंच पर...!"

बड़ी-बड़ी मूंछों वाले कर्नल दुआ साहब हंसते हुए बोले, "मैं यों पकड़ लिया जाऊंगा, यह तो पता ही नहीं था। खैर, एक दफा बचपन में मैंने चोरी की थी, वह किस्सा सुनाता हूं...!"

फिर कर्नल साहब ने पूरा किस्सा भी सुना दिया। बोले, "भई, बचपन में मुझे मिठाइयां बहुत अच्छी लगती थीं। पर घर के लोग रोकते थे कि रहने दो, बीमार पड़ जाओगे। तो एक दफा मैंने पापा के बटुए से पचास रुपये की चोरी की थी, ताकि खूब सारी मिठाइयां खा सकूं।... पर, हाय राम, फिर मैं बुरी तरह

बीमार पड़ा, और मेरी चोरी भी पकड़ी गई...!''

सुनकर सब लोग खूब हंसे।

इसके बाद तो एक-एक करके सबने अपने बचपन की मजेदार बातें सुनाईं। किसी ने बचपन में अपने दोस्त को 'अप्रैल फूल' बनाकर छकाया था, तो किसी ने छुट्टी वाले दिन पेड़ पर उछल-कूद करते हुए बंदरों जैसी शरारतें की थीं। किसी ने बाग से आम और अमरूद चुराए थे और कोई-कोई तो स्कूल से भागकर सारे दिन पास के बगीचे में ही बैठा रहता था। सारे किस्से एक से एक मजेदार थे। और कुछ तो ऐसे कि हंसते-हंसते सबका पेट दुखने लगा।...

इसके बाद भुल्लन चाचा फिर माइक पर आए। बोले, ''और अब बाल दिवस का आखिरी, लेकिन सबसे मजेदार कार्यक्रम होगा। इसमें बड़े लोग भी हम बच्चों के साथ मिलकर नाचेंगे।...और अगर नाच न आता हो तो भी एक-दो ठुमके तो जरूर ही लगाएंगे!''

सुनते ही सब ओर हंसी की लहर सी दौड़ गई। लोग एक-दूसरे की ओर देख, खुलकर हंस रहे थे। बढ़िया नाच आता ही किसे था!

और फिर खुशदिल आंटी पर नजर पड़ते ही भुल्लन चाचा ने उन्हें आगे आकर कमान संभालने के लिए कहा, ''हम सबकी प्यारी खुशदिल आंटी और मीना दीदी, अरे आप अभी तक बैठी हैं। उठिए और सबको नाचने के लिए कहिए। ...और हां, शुरुआत खुद से ही कीजिए। आप भूल गईं, आपने हमसे प्रॉमिस किया था...?''

इस पर पूरे मोहल्ले की खुशदिल आंटी और मीना दादी ने हंसते हुए डांस शुरू किया तो एक-एक करके सारे लोग ताली बजा-बजाकर लगे नाचने। यहां तक कि कर्नल दुआ और उनके साथ आए एसोसिएशन के लोग भी जमकर नाचे...

और भुल्लन चाचा...? उनके चेहरे की मीठी हंसी कह रही थी, अच्छा, तो इसका मतलब...ठीक से मन गया अपना बाल दिवस! ❑

नीचे दिए गए दोनों तस्वीरों में आठ अंतर हैं। जरा ढूंढो तो!

उत्तर

1. आदमी की मूंछें बड़ी हैं। 2. कुत्ते की नाक बड़ी है। 3. दीवार के पीछे एक बच्चा गायब है। 4. बच्चों की कल्पना में आदमी की आंखें बंद हैं। 5. एक बच्चा हंस नहीं रहा है। 6. आगे वाले लड़के की दूसरी टांग नहीं दिख रही है। 7. आदमी की कल्पना में एक बैंगन अधिक है। 8. जूते का फीता गायब है।

संविधान

–सुभाष सी. कश्यप

किसी देश का संविधान वहां के लोगों की शासन-व्यवस्था का बुनियादी ढांचा निश्चित करता है। वह राज्य के प्रमुख अंगों- विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की स्थापना करता है, उनकी शक्तियों को परिभाषित करता है, उनकी जिम्मेदारियां निर्धारित करता है और उनके एक-दूसरे के साथ तथा जनता के साथ संबंधों का नियमन करता है।

लोकतंत्र में प्रभुसत्ता जनता में निहित होती है और आदर्श स्थिति में जनता स्वयं अपने ऊपर शासन करती है। लेकिन असंगठित या व्यवस्थाहीन लोग प्रभुसत्ता का सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। लोगों को अपनी इस सत्ता को अभिव्यक्त करने और व्यवहार में लाने के लिए एक संस्थागत माध्यम की जरूरत होती है। जनता द्वारा अपनी संप्रभुता के प्रयोग के लिए सबसे पहले अपने को एक संविधान देना होता है। जिसमें राज्य के विभिन्न अंगों को दी जाने वाली शक्तियों और अनुपालन के नियमों का उल्लेख होता है।

ऐसा माना जाता है कि लोकतांत्रिक संविधानों द्वारा दी गई शासन-व्यवस्था में जनता समय-समय पर होने वाले चुनावों में अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन करके अपनी प्रभुसत्ता का निरंतर प्रयोग करती है।

संघात्मक राज-व्यवस्था में संविधान अन्य बातों के अलावा संघीय सरकार के सभी अंगों के साथ-साथ संघ की इकाइयों या राज्यों की सरकारों के बीच अधिकारों का निर्धारण, सीमांकन और बंटवारा करता है।

एक देश के संविधान को वहां का आधारभूत कानून भी कहा जा सकता है जो वहां की राज-व्यवस्था का मूल-तत्वों का विधान करता है। जिनकी कसौटी पर बाकी सारे कानूनों और राज्य के दूसरे आदेशों की प्रामाणिकता और वैधता परखी जाती है।

प्रत्येक संविधान उसके निर्माताओं की संकल्पना और मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। वह जनता की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मान्यताओं और उनके विश्वासों और

आकांक्षाओं पर आधारित होता है। लेकिन जहां संविधान सामाजिक परिवर्तन अथवा सामाजिक क्रांति का साधन होते हैं, वहां हो सकता है कि इनमें निहित मूल्य विरासत से मिले सामाजिक मूल्यों से भिन्न हों। संविधान का उद्देश्य ऐसी संस्थाओं को स्थापित करना है जिनके द्वारा उन मूल्यों को प्राप्त किया जा सके जिनका संविधान निर्माताओं के मन में सबसे ऊंचा स्थान रहा है। संविधान का प्रत्येक प्रावधान एक निश्चित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए होता है। जॉन डेवी ने अपनी पुस्तक 'थ्योरी ऑफ रिवोल्यूशन' में यह बात कही है कि व्यक्तिगत या संस्थागत मानवीय व्यवहार को दिशा देने में हम लोग मूल्यों के आकलन या लक्ष्यों की कीमत से यदि नियंत्रित न होते तो प्रभावित अवश्य ही होते हैं।

किसी देश के संविधान को एक जड़ दस्तावेज समझना गलत है क्योंकि संविधान सिर्फ वही नहीं है जो उसके मूलपाठ में लिखा है। संविधान कार्यशील संस्थाओं की सजीव रचना है। वह हमेशा बढ़ता और विकसित होता रहता है। प्रत्येक संविधान को अर्थ तथा सार, उसको लागू करने वाले लोगों, उनके लागू करने के तरीकों, देश के न्यायालयों द्वारा दी गई व्याख्याओं और समय-समय पर विकसित हुई परंपराओं से मिलता है। इस संबंध में सर्वोच्च न्यायालय ने एस.पी. गुप्ता और अन्य बनाम भारत संघ (एआईआर. 1982 एससी 149) केस में यह टिप्पणी की है :

'किसी देश का संविधान एक जीवंत दस्तावेज है और इस कारण उसकी संकीर्ण अतिसिद्धांतवादी दृष्टि से व्याख्या नहीं की जा सकती। जिन पर संविधान की व्याख्या करने का दायित्व है उनको व्यापक और उदारभाव से प्रेरित होना चाहिए। इसका यह मतलब नहीं है कि वे संविधान की भाषा को बढ़ाने-चढ़ाने या उसे विकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं। संविधान के प्रत्येक प्रावधान के सामान्य प्रयोजनों और उसकी सामान्य योजना, उसके इतिहास, उद्देश्य और उससे अपेक्षित परिणाम को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। संविधान के प्रावधानों की व्याख्या के लिए उसके वर्तमान व्यवहार और कार्य-कारण तर्क प्रणाली को भी अपनाना चाहिए।'

भारत का संविधान

हमारा वर्तमान संविधान- यह भारत का पहला संविधान है जिसको भारत की जनता ने बनाया और स्वयं को प्रदान किया। 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा इसको स्वीकार किया गया और 26 जनवरी, 1950 से पूरी तरह से लागू हुआ। पर (संविधान के) भाग-2 के अनुच्छेद 5-9 जो नागरिकता से संबंधित हैं, 26 नवंबर, 1949 से ही लागू हो गए। जिस दिन संविधान सभा ने संविधान स्वीकार किया।

अपने संविधान के अंतर्गत हम भारत के नागरिक संसद और राज्य विधान मंडलों के सदस्यों को निर्वाचित करते हैं। लोक सभा और राज्यों की विधान सभाओं को जनता वयस्क मताधिकार के आधार पर सीधे निर्वाचित करती है। 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के सभी नागरिक निर्वाचक हैं और उन्हें वोट देने का अधिकार है। वे अपनी पसंद के प्रतिनिधियों को चुन सकते हैं जो फिर संघ और राज्य सरकारें बनाते हैं। ये सरकारें क्रमशः लोक सभा और राज्य विधान सभाओं के प्रति उत्तरदायी होती हैं।

हमारे संविधान में मूल-अधिकारों- राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांतों और नागरिकों के मूल-कर्त्तव्यों का विवरण देने वाले अध्याय हैं। ये ही हैं जो भारतीय नागरिकता को मूल्यवान बनाते हैं। उदाहरण के लिए अगर संविधान किसी मूल-अधिकार की गारंटी नहीं देता तो नागरिकता की क्या कीमत होगी और जब तक समाज के हितों का ध्यान नहीं रखा जाता, नागरिक अपने दायित्वों के प्रति जागरूक नहीं

होते और अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करते तब तक एक नागरिक के अधिकारों को कैसे सुरक्षित किया जा सकता है।

राष्ट्र निर्माण के लिए और नागरिकों की भागीदारी वाली लोकतांत्रिक राज-व्यवस्था कायम करने के लिए जानकार नागरिकों से युक्त शिष्ट समाज विकसित करना अनिवार्य आवश्यकता है।

संविधान के 73वें और 74वें संशोधन के लागू होने के बाद शक्ति को साधारण नागरिकों तक लाने का प्रयास किया जा रहा है। जिसका वे इस्तेमाल करें ताकि उन्हें शासन की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाया जा सके और हमारी राज-व्यवस्था को वास्तव में भागीदारी वाले लोकतंत्र के रूप में बदला जा सके जिसमें नागरिकता-मूल्यों के प्रति श्रद्धा हो और वे सभी नागरिकों के व्यवहार के अंग बन जाए। सर्वोच्च न्यायालय के शब्दों में (एआईआर 1882 एससी 149):

"भारत के संविधान ने स्वस्थ प्रशासन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से राज्य के विभिन्न अंगों को अलग-अलग शक्तियां प्रदान की हैं और उन सबको भारत के सभी नागरिकों के लिए सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता; प्रतिष्ठा और अवसर की समानता प्राप्त करने तथा व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए बंधुत्व की भावना बढ़ाने की संयुक्त जिम्मेदारी सौंपी है। इस संयुक्त प्रयास में राज्य के सभी अंगों के बीच सहयोग, परस्पर सहानुभूति और समझदारी होनी आवश्यक है। संविधान का यह तकाजा है कि उनके बीच परस्पर विश्वास हो और संदेह की कोई गुंजाइश न हो। राज्य के किसी अंग में किसी दूसरे अंग के प्रति अविश्वास या संदेह का भाव होने के परिणामस्वरूप एक बड़ी राष्ट्रीय विपदा अवश्यंभावी है।"

भारत के हम सभी नागरिकों से इन मूल्यों का सम्मान करने और भारत के लोकतंत्र के प्रयोग को सफल बनाने की अपेक्षा की जाती है। संविधान सभा में दिए गए अपने भाषण में प्रथम प्रधानमंत्री ने हमें सचेत किया था कि कानून और संविधान ही, किसी देश को महान नहीं बनाते हैं। राष्ट्र को महान बनाने के लिए जनता (अर्थात् नागरिकों) का उत्साह, उसकी ऊर्जा और उसके द्वारा सतत प्रयास आवश्यक है। ❑

प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'भारतीय संविधान और आम आदमी' से साभार

दीप जल उठे

–सुधा गुप्ता 'अमृता'

सोनू झुग्गी–झोपड़ी में अपनी मां के साथ रहता था। मां के अलावा इस दुनिया में उसका कोई नहीं था। उसकी मां बूढ़ी तो नहीं थी किंतु, बीमार रहती थी। आठ–दस बरस का सोनू भीख नहीं मांगना चाहता था किन्तु, पेट भरने के लिए वह और क्या करता क्योंकि बाल मजदूरी पर रोक के कारण कोई उसे काम पर ही नहीं रख रहा था इसलिए मांगने पर ही जो कुछ मिलता, मां– बेटे उसी से पेट भरते।

दिन ऐसे ही व्यतीत हो रहे थे। एक दिन सोनू मां के पास बैठकर उसके पांव दबा रहा था। वह मां से बोला– ''मां, दीपावली का त्योहार है। शहर में बहुत रौनक है।'' मां ने कहा– ''हां बेटा, हम गरीब बेसहारों के लिए क्या होली– क्या दीवाली! मां की आंख में आंसू थे किंतु, वह सोनू को समझाती– ''बेटे ईश्वर पर विश्वास रखो, सब दिन एक से नहीं रहते, उसके घर में देर है, अंधेर नहीं।'' मां–बेटे बातें करते–करते सो गए।

दूसरे दिन दीवाली थी। सोनू सुबह से ही घर से निकल गया। उसका मन बड़ा बेचैन था। भीख मांगने पर जो कुछ मिला, मां– बेटे ने खाया फिर शाम को सोनू ने मां से कहा– मां तुम आराम करो। मैं थोड़ा शहर घूमकर आता हूं।

हां, जाओ बेटा किंतु, थोड़ा संभलकर। लोग दीवाली में बम-पटाखे फोड़ते हैं, कहीं जल मत जाना। दीपावली में सावधानी बरतनी बहुत जरूरी है। ''ठीक है मां, तुम चिंता मत करो।''

सोनू अपनी झोपड़-पट्टी बस्ती से बाहर निकल कर शहर में आ गया। चारों ओर ऊंची-ऊंची अट्टालिकाओं में बिजली की झालरें जगमगा रही थीं। बच्चे बम-पटाखे, फुलझड़ियां चला रहे थे। सबके माता-पिता भी सुंदर-सुंदर वस्त्रों में बच्चों के साथ सजे-धजे दिख रहे थे। सोनू का मन यह सब देखकर मुग्ध हो रहा था। उसने एक बार अपनी फटी कमीज और पैंट को निहारा, थोड़ा निराश हुआ किंतु मां की बात याद करते हुए स्वयं से कहने लगा- 'सब दिन एक से नहीं होते, ईश्वर पर विश्वास रखो, उसके घर देर है, अंधेर नहीं'। यह सोचकर वह मन ही मन मुस्कुराया। उसने अपनी निराशा को सिर झटककर जैसे दूर फेंक दिया। फुलझड़ी चलाते हुए जैसे ही बच्चे उछलते, वह भी दूर खड़ा खूब उछलता और गाने लगता- ''फूटे पटाखे बम बम बम, उछले-कूदे हम हम हम।'' वह तालियां बजाकर आनंद ले रहा था।

सोनू घूमते-घूमते अब दूसरी सड़क पर आ गया था। सड़क किनारे वह एक पत्थर पर बैठ गया। वह चारों तरफ जगमगाहट देख रहा था, उसे कुछ भूख भी लगी थी। उसने अपनी फटी जेब में हाथ डाला। हंसते हुए मन ही मन कहने लगा- ''जगमग करती आई दीवाली, अपनी जेब है खाली-खाली।'' फिर वह उठा और एक घर के सामने जाकर रुक गया जहां पूजा हो रही थी, हवन की गंध आ रही थी, घंटे बज रहे थे, श्री गणेश और मां लक्ष्मी की आरती हो रही थी। सोनू वहीं दरवाजे पर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। थोड़ी देर में घर के लोग बाहर निकल कर दीये सजाने लगे। सोनू दूर खड़े होकर दीये की सजती कतारों को ध्यान से देख रहा था। अचानक हवाएं तेज चलने लगीं। लोग घर के अंदर चले गए। तेज हवा में दीये बुझने लगे। सोनू ने तेल से भरे दीयों को ध्यान से देखा और झटपट एक पॉलिथीन में दीयों का तेल इकठ्ठा करने लगा। वह मन ही मन कहने लगा- 'आखिर दीये तो बुझ ही गए हैं, इन अमीरों को क्या फर्क पड़ता है किन्तु, आज इतने तेल से मैं घर में अपनी मां के पैरों की मालिश करूंगा, सब्जी में बघार लगाऊंगा और कुछ पराठे भी बना लूंगा, दीवाली का त्योहार मना लूंगा'। वह इतना कहता ही जा रहा था कि अचानक भीतर से एक व्यक्ति बाहर निकला। सोनू को दीये का तेल निकालते देखा तो सोनू की जमकर पिटाई करने लगा- ''चोर कहीं के, ऐसे ही लड़के घरों की चोरी करते हैं''। सोनू गिड़गिड़ा रहा था- ''अंकल मुझे मत मारो, मेरी बात सुनो, मैं चोर नहीं हूं।'' पर, अंकल तो बेतहाशा सोनू को थप्पड़ मार रहे थे। सोनू कहे जा रहा था- ''मैं चोर नहीं हूं... मैं चोर नहीं हूं...।''

उस घर के पड़ोस में एक मध्यमवर्गीय परिवार भी रहता था। शोर सुनकर उस घर से एक महिला बाहर आई। उसने सोनू को पिटते देखा, उसका हृदय द्रवित हो उठा। वह मन ही मन कहने लगी- त्योहार का दिन है, यह बच्चा आखिर क्यों पिट रहा है? थोड़ी देर में वह व्यक्ति चीख-चिल्लाकर अंदर चला गया। पर, उस महिला ने सोनू को प्यार से बुलाया- ''बेटा आओ, प्रसाद ले लो।'' सोनू के हाथ से तेल की पॉलिथीन गिर चुकी थी। वह आंसू पोंछते हुए उस महिला के पास आया। महिला ने पूछा- ''बेटा बताओ, क्या बात थी।'' प्यार- स्नेह पाकर सोनू ने रोते हुए गरीबी और तेल इकठ्ठा करने की पूरी बात बताई। सोनू ने कहा- ''मौसी, मैं चोर नहीं हूं। मैं तो अपनी मां के लिए...।'' सोनू के आंसू रुक नहीं रहे थे। सोनू की

बात सुनकर उसकी भी आंखें भर आईं। उसने कहा– ''बेटा तुम्हारा इरादा नेक था और नेक इरादे के लिए जो भी काम किया जाता है, वह अच्छा होता है। किंतु, तुम्हें बुझे दीयों को जलाने का प्रयास करना चाहिए था। दीयों के जलने में ही उसकी सार्थकता है। हमें दीये के समान स्वयं जलकर उजाला फ़ैलाने का प्रयास करना चाहिए। बुझते हुए दीयों को जलाने की कोशिश तुम करते तो शायद अंकल तुम्हारी पिटाई न करते। तुम्हारी कहानी सुनकर तुम्हारे मन की नेक भावनाओं को मैं जान गई हूं। तुम निश्चित ही एक दिन दीपक के समान बनकर अपनी मां के दुःख– अंधेरे दूर करोगे, उसके जीवन में उजियारा भर सकोगे।''

मौसी संबोधन से महिला का मन प्रसन्न हो गया। उसने थोड़ा प्रसाद, भोजन, मिट्टी के दीये, तेल– बाती एक थैले में रख लिए और सोनू से कहा– ''बेटा मुझे बताओ, तुम कहां रहते हो। मैं तुम्हारी बीमार मां से मिलना चाहती हूं।'' सोनू ने कहा– ''ठीक है मौसी, आप मेरे साथ चलिए।'' सोनू मौसी का हाथ थाम कर अपनी झोपड़ी की ओर चल दिया। सोनू पिटाई भूल कर मन प्रसन्न था। उसे दीवाली पर मनभावन चीजें और मुंह बोली मौसी जी मिल गई थीं।

''मौसी आपका नाम क्या है?''

''सोनम।''

''मेरी मां बहुत अच्छी हैं, वह आपसे मिलकर बहुत खुश होंगी।''

''मौसी देखो, वह है हमारी झोपड़ी।''

मौसी ने देखा, जर्जर झोपड़ी में अंधेरा है। सोनू की मां के कराहने की आवाज आ रही है सोनू ..... सोनू .....।

सोनू ने जोर से आवाज लगाई– ''मां... मां... मैं आ गया, देखो मेरे साथ कौन आया है।''

मां ने आश्चर्य से कहा– अरे पगले, अपने यहां कौन आएगा, अब तो मुझे भगवान का ही इंतजार है।''

सोनम– ''बहन नमस्ते''

मां ने नमस्ते में दोनों हाथ जोड़ दिए– और हैरत से उन्हें ताकने लगी।

''सोनू तो बहुत अच्छा लड़का है। वह आपका बहुत ध्यान रखता है।''

''हां...., पर मैं लाचार, उठ– बैठ भी नहीं पाती। इस बच्चे के लिए कुछ नहीं कर पाई।''

''कोई बात नहीं, सोनू ने आखिर मुझे मौसी जो बोला है तो वह मेरा भी बेटा है।''

सोनम ने शीघ्र ही मिट्टी के दीयों में तेल– बाती डालकर दीये जला दिए। झोपड़ी में उजियारा भर गया।

''जाओ सोनू, झोपड़ी के द्वार पर भी दीपक रख कर आओ।''

''हां मौसी, अब मैं दीये जलाऊंगा, बुझाऊंगा नहीं।''

फिर सोनम ने सोनू की मां से कहा– ''लो बहन दीवाली की मिठाई और प्रसाद खा लो, भोजन भी है।''

मां की आंख में आज पहली बार ख़ुशी के आंसू थे।

''सोनू, तुम पढ़ाई–लिखाई करो, पढ़–लिखकर ही जीवन में कुछ कर सकते हो।''

सोनू ने मां की ओर देखा।

यह कैसे संभव है?

''सोनू की पढ़ाई और आपके इलाज की जिम्मेवारी मुझ पर छोड़ दीजिए।''

''सोनू, कल से तुम मेरे साथ स्कूल चलोगे।''

''हां, क्यों नहीं मौसी, कल मैं तैयार होकर आपके यहां आ जाऊंगा।''

दूसरे दिन से सोनू ने भीख मांगना बंद कर दिया। वह सुबह-शाम मौसी के काम में भी मदद करता। सुबह वहीं से, स्कूल जाता। स्कूल से ही उसे पुस्तकें और दिन का भोजन मिलने लगा। वह मां के लिए भोजन बनाता और सेवा करता। मौसी भी उसकी आर्थिक मदद कर देती थी। मां की तबियत भी सुधरने लगी थी।

एक दिन सोनू ने मौसी से पूछा- आप अकेली क्यों रहती हैं?

मौसी ने कहा क्या बताऊं सोनू, मेरा भी एक बेटा था सोहम। सड़क दुर्घटना में सोहम और उसके पिता का देहांत हो गया। तब से अकेली ही रहती हूं। स्कूल में बच्चों को पढ़ाती हूं, उन्हीं में सोहम को तलाशती हूं। अब तो तुम मिल गए हो तो सब कुछ भूल जाऊंगी।

सोनू मन लगाकर पढ़ाई करने में जुट गया। उसकी मेहनत रंग लाई। सोनू अच्छे नंबरों से पास हुआ। मां और सोनम बहुत प्रसन्न हुईं। धीरे-धीरे सोनू बारहवीं कक्षा में पहुंच गया और प्रथम श्रेणी में ही नहीं, उसने मेरिट लिस्ट में स्थान पाया। सोनू ने सोनम मौसी और मां के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। उन्होंने सोनू का माथा चूम लिया। सोनू के सपने परवान चढ़ने लगे।

सोनू ने कहा- ''मैं इंजीनियर बनना चाहता हूं।''

सोनम मौसी ने कहा- ''तुम मेहनत करके पढ़ाई करो, फ़ीस और मां की चिंता मुझ पर छोड़ दो। सोनू इंजीनियरिंग की परीक्षा में पास हो गया। उसका दाखिला सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज में हो गया। उसे स्कॉलरशिप मिलने लगी। चार वर्ष देखते ही देखते गुजर गए। सोनू इंजीनियर बनकर आ गया। उसका कैम्पस सलेक्शन भी हो गया। नागपुर में उसकी नौकरी लग गई।

नौकरी लगने के बाद घर आकर सोनू ने सोनम मौसी के पैर छूते हुए कहा- ''आपके ही कारण मैं अपना सपना पूरा कर पाया हूं। मैं आपका अहसान कभी नहीं चुका सकूंगा।'' सोनम ने प्यार से सोनू के कान पकड़े- ''अच्छा, अब तू इतना बड़ा हो गया है, बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है। मैंने कुछ नहीं किया, यह तो तुम्हारी मेहनत और लगन का फल है। सोनू की मां ने भी कहा- ''सोनू ठीक ही तो कह रहा है, आप तो मेरे लिए उस दीवाली पर लक्ष्मी बनकर आईं वरना यह भीख ही मांगता रहता और मैं कब की मर गई होती।''

''ऐसा न कहिए, दुनिया में बेसहारा बहुत हैं, मैं तो एक ही बच्चे को प्यार दे पाई।''

''यदि हर कोई किसी एक का भी भला करने का संकल्प ले ले तो हर झुग्गी-झोपड़ी उजास से भर जाएगी।''

सोनू ने भरे गले से मौसी से कहा-''कल मां को लेकर मैं नागपुर जाऊंगा, आप भी हमारे साथ चलिए।''

''बेटा सोनू, अभी तो मेरी बहुत नौकरी बाकी है। मैं और भी सोनू ढूंढूगी, जिसे मेरी जरूरत होगी। हां, तुम आते रहना'' तुम आओगे तो लगेगा सोहम आया है। सोनू उदास हो गया।

सोनू की ट्रेन शाम को थी। सोनम स्टेशन पहुंची। सोनू ने पुनः मौसी से आशीर्वाद लिया। सोनम और सोनू की मां एक-दूसरे को विदाई दे रही थीं। ट्रेन धीरे-धीरे खिसकते हुए तेज रफ़्तार पकड़ चुकी थी। खिड़की से सोनू हाथ हिला रहा था। सोनम ने अपनी ख़ुशी में डबडबाई आंखों को छलकने दिया, उसे लगा कि उसके चारों तरफ बुझे दीपक फिर जल उठे हैं। ❑

अधिकार की लड़ाई

–चन्दन कुमार चौधरी

मानस आज सुबह से ही रो रहा है। वह बार-बार नानी के घर जाने की जिद कर रहा है लेकिन मम्मी है कि जाना नहीं चाहती। उन्हें अभी घर में बहुत सारे काम करने हैं। और फिर मानस का स्कूल भी तो चल रहा है। उसके पापा भी तो ऑफिस जा रहे हैं। ऐसे में सब कुछ छोड़ कर मम्मी नानी के घर कैसे जा सकती हैं।

मानस नौ साल का एक छोटा बच्चा है। मम्मी को लगता है कि वह बहुत शरारती है और दिन भर घर में उछल-कूद करता रहता है। कभी कुछ सामान तोड़ता है तो कभी कुछ। मानस के कारण मम्मी कभी चैन की सांस नहीं ले पाती हैं। उनका ध्यान दिन भर उसी पर लगा रहता है। पता नहीं मानस कब, कौन सी शरारत कर जाए जिसके कारण घर में आफत आ जाए।

यह दूसरी बात है कि मम्मी मानस से बहुत प्यार करती हैं। मानस भी यह बात खूब जानता है। ऐसे में वह अक्सर नानी के घर जाने की जिद करता है और मम्मी उसकी बात रखते हुए चल देती हैं। पापा भी उसे नानी के घर जाने से कभी मना नहीं करते हैं। पापा जानते हैं कि महानगरीय जीवन क्या होता है। उस पर यह छोटा सा फ्लैट है। जिसमें दो छोटे से कमरे और एक छोटा-सा बरामदा है। साथ में एक छोटी-सी रसोईघर और एक बाथरूम है।

इतनी छोटी सी जगह में मानस चार जनों के साथ रहता है। मानस, उसकी बड़ी बहन नव्या और उसके मम्मी-पापा। इतनी छोटी-सी जगह में एक चंचल बच्चे का भला कैसे गुजारा हो। वह अक्सर बाहर निकलने की जिद करता लेकिन मुहल्ले में अब पार्क तो बचे ही नहीं हैं। पहले उसके मुहल्ले में तीन पार्क होते थे लेकिन धीरे-धीरे करके अब एक भी नहीं बचा। धीरे-धीरे भू-माफियाओं ने सब पर कब्जा कर लिया। किसी पर मॉल बना दिया तो किसी पर बहुमंजिला इमारत। एक अभी भी खाली है लेकिन उस पर शर्मा अंकल ने कब्जा जमा रखा है। बहुत दबंग और बदमाश आदमी हैं शर्मा अंकल। उनके डर से बच्चे क्या, बड़े भी पार्क तक नहीं फटकते हैं।

शर्मा अंकल ने उस पार्क को दो हिस्से में बांट रखा है। एक हिस्से में उन्होंने जानबूझकर कूड़े का ढेर लगा रखा है जिसमें आवारा जानवर बैठे होते हैं और एक हिस्से में उन्होंने बगीचा लगा रखा है। उस बगीचे में रंग-बिरंगे फूल और पौधे लगे हुए हैं। ऐसे में बच्चों के पास खेलने के लिए कोई जगह नहीं बची है। बच्चे करे तो क्या करें। बड़े बच्चे तो दिन के समय सड़क पर खेल लेते हैं और साईकिल चला लेते हैं लेकिन छोटे बच्चे कहां जाकर खेलें। उनके पास कोई रास्ता नहीं है।

ऐसा नहीं है कि मम्मी को इस बात का खबर नहीं है। तभी तो वह उसे ढेर सारा खिलौने दिलाती हैं। मानस को तो जैसे इनडोर गेम से नफरत है। दूसरी तरफ है उसकी बहन नव्या। मानस से तो बड़ी है। वह कहीं बाहर जाने और नानी के घर जाने की जिद भी नहीं करती है। वह तो दिनभर घर पर ही रहती है और उछलकूद भी नहीं मचाती। लेकिन यह मानस भी ना... किसी की भी नहीं सुनता। इस बार तो मम्मी ने नानी के घर जाने से साफ मना कर दिया है लेकिन मानस है कि मान नहीं रहा है। वह लगातार रोए जा रहा है।

दरअसल बात यह है कि नानी के घर जहां है वहां बहुत बड़े-बड़े पार्क हैं। मानस को वहां खेलने में बहुत मजा आता है। वह अपने मामा के साथ साईकिल चलाने भी जाता है। उसकी नानी का घर भी बहुत बड़ा है। इस वजह से उसका छत भी बहुत बड़ी है। वहां मानस को उछलकूद करने से कोई रोकता-टोकता भी नहीं। पिछले साल की ही तो बात है जब मानस अपने पापा के गांव गया था। वहां पर उसने कितनी मस्ती की थी। उसे अब भी वह सब बातें याद हैं। वह अक्सर अपने पापा से गांव जाने की जिद करता है। पापा ने उसे गर्मी की छुट्टी में गांव ले जाने का वादा किया है। लेकिन गर्मी की छुट्टियों में तो अभी बहुत समय है। उसे इतना सब कुछ बर्दाश्त कहां है। ऐसे में वह कुछ-कुछ दिनों पर नानी के घर जाने की जिद करने लगता है।

मानस को लगातार रोते देख, आखिरकार मम्मी का दिल पसीज गया। वह मानस को नानी के घर ले जाने के लिए तैयार हो गई। मम्मी के मान जाने और नानी के घर जाने की बात सुनकर वह बहुत खुश हो गया। दो-चार दिन तक उसने वहां बहुत मनमानी की। खूब उछल-कूद की... खूब। वहां उसे कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था और ना ही कोई उसे पढ़ाई के लिए कहने वाला था। सब उसे खूब प्यार भी करते थे। साथ ही इस बार उसकी छोटी मौसी भी वहां आई थी। जिसके साथ उसकी बहुत बनती थी। मौसी शहर के एक कॉलेज में पढ़ाई करती हैं। अब जब मानस को वापस अपने घर आना था, उससे दो दिन पहले वह उदास-उदास सा रहने लगा। उसे लग रहा था कि वह फिर से घर वाले जेल में बंद होने जा रहा है।

मानस की यह उदासी उसकी मौसी नवनीत से छुपी नहीं रह सकी। पहले तो नवनीत को लगा कि कोई छोटी-मोटी बात होगी जिसके कारण मानस बुझा-बुझा सा रहता है लेकिन जब दिन भर उसकी हालत ऐसी ही रही तो उससे रहा नहीं गया। उसने मानस को कुरेदना शुरू किया। पहले तो मानस ने कुछ नहीं बताया लेकिन बाद में वह खुल गया। उसने अपनी मौसी से अपने दिल की बात बता दी।

मानस ने बताया "मौसी, मेरे घर के पास ना कोई पार्क नहीं है। पहले जो दो-तीन पार्क थे, वे अब नहीं रहे। एक पर एक बिल्डिंग बना दी गई है और एक पर मॉल। एक पार्क पर तो शर्मा अंकल कब्जा जमाए बैठे हुए हैं। वहां तो वह किसी को फटकने भी नहीं देते। ऐसे में मैं घर के बाहर खेल नहीं पाता हूं और घर में बोर हो जाता हूं। इतना ही नहीं

मेरे साथ के कई बच्चे हैं जिन्हें घर में ही बंद रहना पड़ता है। बोलो, मौसी यह मेरे साथ अन्याय है कि नहीं।''

मौसी मानस की बात गंभीरता से सुन रही थी। मानस के सवाल पर उन्होंने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, ''हां, बेटा। यह तो गंभीर बात है और बहुत बड़ा अन्याय है।''

मौसी ने मानस से पूछा, ''क्या तुम इस अन्याय से बाहर निकलना चाहते हो या फिर इसे बर्दाश्त करते रहना चाहते हो।''

मौसी की बात सुनकर मानस ने कहा, ''नहीं मौसी मैं तो इससे बाहर निकलना चाहता हूं लेकिन कोई रास्ता ही नहीं सूझ रहा है।''

मौसी ने कहा, ''रास्ता मैं बता दूंगी लेकिन क्या तुम उस रास्ते पर चलने के लिए तैयार हो।'' मौसी की बात पर मानस ने उत्साहपूर्वक कहा, ''हां, हां मौसी जरूर। आप बताओ तो सही। मुझे क्या करना पड़ेगा। मुझे किस रास्ते पर चलना होगा।''

मानस की बात सुन कर मौसी मुस्कुराने लगी। मौसी बोली, ''सोच लो मानस, बड़ा कठिन रास्ता है। कर सको, तभी हां करना। नहीं तो कोई बात नहीं, छोड़ दो।''

मानस भी भला कब हार मानने वाला था। उसने कहा, ''मौसी आप कुछ बताती तो हो नहीं, सिर्फ करना होगा, करना होगा कि रट लगाए हुई हैं।''

मौसी समझ गई कि अब मानस उनकी बातों से बोर होने लगा है। ऐसे में वह सीधे मुद्दे की बात पर आ गई। उन्होंने कहा, ''मानस, इस अन्याय से बाहर निकलने के लिए तुम्हें लड़ाई लड़नी होगी।''

मौसी की बात सुनकर मानस पेट पकड़कर जोर-जोर से हंसने लगा। मानस हंसे जा रहा था लेकिन मौसी गंभीर बनी हुई थीं। जब मानस की हंसी बंद हुई तो उन्होंने कहा, ''बस हो गया। लड़ाई की बात सुनकर ही पसीने छूट गए। फिर इस अन्याय से बाहर कैसे निकलोगे।''

मौसी की बात पर मानस फिर हंसने लगा। उसने मौसी से पूछा कि इसके लिए उसे किससे लड़ाई करनी पड़ेगी?

मौसी ने कहा, ''उन भू-माफियाओं से जिन्होंने तुम्हारे मुहल्ले के पार्क पर कब्जा जमा रखा है। उस शर्मा अंकल से जो तुम लोगों को उस पार्क के पास नहीं आने देते हैं।''

मौसी की बात सुनकर मानस फिर हंसने लगा। अबकी बार मौसी ने मानस को डपट दिया। कहा, ''चुप हो जाओ। अगर, तुम्हें अन्याय से छुटकारा पाना है तो तुम्हें यह सब करना पड़ेगा।'' अबकी बार मानस चुप हो गया। ऐसा लगा जैसे उस पर मौसी की डांट का असर कुछ ज्यादा हो गया हो।

उसने रूआंसा होते हुए कहा,

"लेकिन मौसी आप नहीं जानती हैं क्या शर्मा अंकल कितने बड़े हैं। मैं भला उनसे कैसे लड़ सकता हूं। वो मेरा कचूमर निकाल देंगे और मम्मी भी तो लड़ाई करने से मना करती हैं।"

अबकी बार हंसने की बारी मौसी की थी। मानस की बात सुनकर मौसी जोर-जोर से हंसने लगी। मौसी को इस तरह हंसता देख मानस झुंझला उठा और वह वहां से जाने लगा। लेकिन मौसी ने उसे जाने नहीं दिया और उसको पकड़ कर अपनी गोद में बिठा लिया और उसे प्यार करने लगी और कहने लगी "मेरा सोना बेटा... कितना प्यारा है तू... कितना भोला है रे तू। अरे लड़ाई करने के लिए कहने का मेरा मतलब मारपीट से नहीं है बेटा। मेरा मतलब तो गांधीजी के रास्ते पर चल कर जीत हासिल करने की है।"

मौसी की बात सुन कर मानस को अब कुछ-कुछ बातें समझ में आने लगी। उसने उत्साहित होकर पूछा, "लेकिन मौसी उसका रास्ता क्या है। आप कुछ विस्तार से बताती क्यों नहीं।" मौसी ने कहा, "अभी कुछ नहीं। अब रात में खाना खाने के बाद छत पर सोने के समय सारी बातें विस्तार से समझाऊंगी।" इसके बाद मौसी ने उसे अपने पर्स से एक चॉकलेट निकाल कर खाने के लिए दी और मानस वहां से खेलने के लिए चला गया।

मानस बेसब्री से रात होने का इंतजार कर रहा था। जब रात हुई तो वह खाना खाने के बाद छत पर मौसी के पास सोने के लिए चला गया। "अब बताओ मौसी, मुझे क्या करना होगा।" मानस ने पूछा।

मौसी ने कहा, "देखो मानस। तुम बच्चे हो और तुम्हारे कुछ अधिकार हैं। बाल अधिकार के तहत जीवन का अधिकार, पहचान, भोजन, पोषण और स्वास्थ्य, विकास, शिक्षा और मनोरंजन, नाम और राष्ट्रीयता, परिवार में उपेक्षा से सुरक्षा, बदसलूकी, दुर्व्यवहार, बच्चों का गैर-कानूनी व्यापार आदि शामिल हैं। भारत में बच्चों की देखभाल और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए 2007 के मार्च महीने में राष्ट्रीय बाल अधिकार सुरक्षा के लिए एक कमीशन या संवैधानिक संस्था का निर्माण भारत की सरकार ने किया है।"

"इतना ही नहीं, संयुक्त राष्ट्र हर साल 20 नवंबर को 'अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकार दिवस' मनाता है। इस दिन को 'बचपन दिवस' भी कहते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा निर्धारित मापदंड को दुनिया के कई देशों ने सहर्ष स्वीकार किया है और बच्चों के अधिकारों के प्रति अपनी जागरूकता जाहिर की है। यह दिवस अंतरराष्ट्रीय एकजुटता, बच्चों के प्रति जागरूकता और बच्चों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।"

मौसी ने पूछा, "अब बताओ एक बच्चा होने के नाते तुम्हें जीवन का अधिकार, पोषण और स्वास्थ्य, विकास, शिक्षा और मनोरंजन का अधिकार है कि नहीं।" मानस ने कहा, "बिल्कुल है मौसी। लेकिन मुझे यह अधिकार मिल कहां रहा है।"

मानस का सवाल सुनने के बाद मौसी ने कहा, "जब तुम्हें तुम्हारा अधिकार नहीं मिल रहा है तो क्या तुम चुप बैठे रहोगे या कुछ करोगे। घर पर जब पापा नव्या को चॉकलेट देते हैं और तुम्हें नहीं देते हैं तो तुम क्या करते हो। चुप रहते हो या लड़ाई करते हो, रोने लगते हो। ऐसे में तुम्हें इसके लिए लड़ना चाहिए कि नहीं।"

मानस ने सहमति में सिर हिलाया। मौसी की बात मान कर उसने मन ही मन लड़ने की ठान लिया था।

मम्मी के साथ इस बार अपने घर वापस आने पर मानस ने मुहल्ले में अपने उम्र और बड़े लड़कों से बात की और पार्क के लिए आंदोलन चलाने की चर्चा की। सभी लोग मानस की बात सुनकर हंसने लगे लेकिन वह गंभीर बना रहा। उसकी बातों को

सुनकर मानसी, रूपम और नव्या सहित कुछ लड़कियों ने उसका साथ देने का निर्णय लिया। अब सभी मिल कर पार्क के लिए लड़ने की योजना बनाने लगे। अगले दिन शर्मा अंकल के कब्जे वाले पार्क के पास मानस ने धरने का आयोजन किया। उस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए मानस सहित कुल पांच बच्चे ही पहुंचे।

शर्मा अंकल ने पहले तो सभी बच्चों को भगाने का प्रयास किया लेकिन बच्चे अपनी जिद पर अड़े रहे और वहां दरी बिछा कर धरने पर बैठ गए। बच्चों के हाथों में तख्तियां थीं जिसमें पार्क खाली करने की मांग की गई थी। मुहल्ले के लोग वहां बच्चों को देखने के लिए दिन में कई बार आए। तपती धूप के बावजूद बच्चे दिन भर वहां से टस से मस नहीं हुए और धरने पर बैठे रहे। पार्क को लेकर किए जा रहे प्रदर्शन की चर्चा पूरे मुहल्ले में शुरू हो गई थी।

अगले दिन से धरने में भाग लेने के लिए मुहल्ले के कुछ बुजुर्ग भी पहुंच गए। देखते-देखते वहां लोगों की भीड़ जुटने लगी और महिलाओं ने भी वहां धरना देना शुरू कर दिया। मुहल्ले में ही रहने वाले प्रतीक अंकल ने एक दिन अपने अखबार में इस धरने की खबर छाप दी। फिर क्या था। देखते ही देखते इस प्रदर्शन की खबर सोशल मीडिया और टेलीविजन चैनलों पर चलने लगी। वहां लोगों की काफी भीड़ जुटने लगी। वहां बाहर से भी लोग आने लगे। धरना स्थल पर रात में प्रदर्शन जारी रखने के लिए रोशनी के पर्याप्त इंतजाम किए गए थे। अपना सामान बेचने के लिए वहां कुछ फेरीवाले और दुकानदार भी आ गए।

शर्मा अंकल ने पहले इस बात को ज्यादा तवज्जो नहीं दी थी लेकिन अब वह अंदर से सहम से गए हैं। हालांकि, वह पार्क खाली नहीं करने की अपनी जिद पर अभी भी अड़े हुए थे। ऐसे में उन्होंने दो अन्य पार्क पर कब्जा जमाए लोगों के साथ मिल कर मानस के परिवार को तंग करना शुरू कर दिया। साथ ही मानस के पापा को भी उनके कार्यालय में परेशान किया जाने लगा। बावजूद कोई टस से मस नहीं हुआ और पूरा परिवार मानस के साथ खड़ा रहा।

दूसरी तरफ मानस के आंदोलन को लोगों का भरपूर साथ मिलने लगा था। अब मीडिया में उसकी काफी खबरें चलने लगीं थीं। कुछ एनजीओ भी मानस की मदद के लिए वहां पहुंच गए थे। सोशल मीडिया भी उसका भरपूर साथ दे रहा है। ऐसे में स्थानीय प्रशासन को अब सक्रिय होना पड़ा। प्रशासन के लोग मानस से आंदोलन समाप्त करने का आग्रह कर रहे हैं लेकिन वह टस से मस नहीं हो रहा है। वह पार्क पर कब्जा समाप्त करने की मांग कर रहा है। आखिरकार बच्चों के इस आंदोलन की खबर मुख्यमंत्री तक भी जा पहुंची।

मुख्यमंत्री ने इस आंदोलन पर तुरंत संज्ञान लिया। एक दिन वह अचानक धरना स्थल पर पहुंच गए। मुख्यमंत्री के इस तरह धरना स्थल पर आने से प्रशासन के हाथ-पांव फूल गए। मुहल्ले के लोग भी आश्चर्यचकित रह गए। किसी को मुख्यमंत्री के वहां आने की उम्मीद नहीं थी। आखिरकार मुख्यमंत्री ने प्रशासन को पार्क से कब्जा हटाने का आदेश दिया और मानस से धरना समाप्त करने का आग्रह किया। लेकिन मानस था कि अब भी नहीं मान रहा था। उसने कहा, ''मुख्यमंत्री महोदय, हमारे मुहल्ले में तीन पार्क थे। जिसमें से आप एक पार्क से कब्जा हटाने के लिए कह रहे हैं, दो अन्य का क्या होगा जिस पर मॉल और बिल्डिंग बना दिए गए हैं। सरकारी फाइल में वह जमीन पार्क के लिए आवंटित है। आप खुद देख सकते हैं।''

मानस की बात सुन मुख्यमंत्री ने प्रशासन से दो अन्य पार्क को भी तुरंत खाली कराने का आदेश

दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मॉल और बिल्डिंग तोड़ी जाए। इसके बाद मुख्यमंत्री ने मानस से पूछा अब तो खुश हो। मानस ने खुश होकर, मुस्कुराते हुए सहमति में अपना चेहरा हिला दिया।

मानस ने कहा, ''मुख्यमंत्री जी यह अधिकार की लड़ाई है। एक बच्चा होने के नाते हमें जो अधिकार मिले हैं, हम उसे हासिल करने की लड़ाई लड़ रहे थे। इस लड़ाई में आपने हमारा भरपूर साथ दिया। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। उम्मीद करता हूं कि आप आगे भी बाल अधिकार संरक्षण के लिए काम करते रहेंगे।''

मानस का संघर्ष आखिरकार रंग लाया और बाल अधिकार की जीत हुई। मानस के प्रयास के कारण अब मुहल्ले में तीन-तीन पार्क हैं जहां बच्चे से लेकर बड़े-बुजुर्ग आते-जाते रहते हैं। मुहल्ले के सभी लोग मानस की चर्चा करते रहते हैं कि कैसे एक छोटे से बच्चे ने अपने अधिकार की लड़ाई लड़ कर बड़े-बड़े भूमाफियाओं को परास्त कर दिया और तीन पार्क खाली करा लिए। ❑

तारों की दुनिया

–श्रवण कुमार सेठ

आसमान में लाखों तारे
कितने सुंदर कितने प्यारे।
टिमटिम-टिमटिम चमक रहे हैं
लुका-छिपी खेल रहे हैं।।

कितनी रोचक बातें हैं बच्चों!
सूरज भी एक तारा है;
उसने ही धरती पर मेरी
फैलाया उजियारा है।

आओ कहानियां तारों की
बच्चों! तुम्हें सुनाता हूं;
धरती से भी हैं विशाल
यह राज, आज बतलाता हूं।

बच्चों 'प्रकाश वर्ष' मापता
आकाशीय पिंडों की दूरी;
अन्तरिक्ष का ज्ञान तुम्हें;
है रखना बहुत जरूरी।

करोड़ों 'प्रकाश वर्ष' दूर
हमसे हैं ये तारे;
इसीलिए टिमटिम-टिमटिम
करते रहते सारे।।

केंद्र में इनके एक प्रक्रिया
चलती रहती हरदम;
'नाभिकीय संलयन' को जानो
दूर कर लो अपने भ्रम।

तारों में सूरज काका
हैं धरती के सबसे पास।
ऊर्जा के वह स्रोत महान
है जीवन उनका प्रकाश।।

खुशियों भरी दीवाली

–पूनम मेहता

महावीर कॉलोनी में, एक घर का बच्चा बेहद उदास था। चिंटू को न दीवाली का इंतजार था, ना बाल दिवस का। उसके सबसे अच्छे दोस्त रानी, पिंकी, तरूण और गुड्डी इस बार उसके साथ जो नहीं थे। सभी अपने गांव जा रहे थे। अधिकांश लोग प्राईवेट फर्मों में काम करते थे, मंदी के चलते उनकी छंटनी कर दी गई थी। कोरोना के चलते इन बच्चों के अभिभावकों की नौकरी छूट गई थी। घर चलाने के लाले पड़ गए थे। गांव को पलायन करना ही इनके लिए एकमात्र हल था।

चिंटू अपने पापा–मम्मी के साथ शहर की पॉश कॉलोनी में रहता था। कालोनी के पास थी रेलवे लाईन। उसके सहारे बने छोटे मकानों में रहने वाले ये बच्चे हमउम्र होने के नाते उसके दोस्त थे। चिंटू इनके साथ ही खेलता था। दीवाली पर पटाखे चलाना, मिठाईयां खाना–खिलाना, रंगोली

बनाना, साफ-सफाई करना इन सभी को बहुत भाता था।

कॉलोनी के कुछ घरों में लाईटें लग चुकी थीं पर कोरोना के चलते इस बार न त्योहारों में वैसी रौनक थी, ना उमंग। बच्चे स्कूल नहीं जा रहे थे, पर खेल भी नहीं पा रहे थे। दशहरे, दीवाली पर कुछ मस्ती की आस बंधी थी पर वह भी लोगों के पलायन से अब धूमिल हो गई थी। चिंटू तो नितान्त अकेला पड़ गया था। घर की इकलौती संतान होने के नाते दशहरे शुरू होने से पहले ही पटाखे, खिलौने, रंग, नए कपड़े, मिठाईयां मम्मी-पापा ने ला कर रख दी थीं पर चिंटू ने उन्हे देखा तक नहीं था।

बहुत दिनों से उसे उदास देख के मां परेशान थी। एक दिन पूछ ही बैठी। चिंटू ने सारी बातें बताई। मां ने समझा कि बच्चों के जीवन में कोरोना से कितनी मुश्किल आई है। पहले की तरह मिलना-जुलना, खेलना-कूदना सब बंद हो गया है। स्कूल जाने से जो मनोरंजन होता था। वह भी अब नहीं था। खेलने से आनंद आता था पर वह भी अब जीवन से नदारद था। मां ने उसके दोस्तों के लिए कुछ करने की सोची।

गृहणी थीं पर बाज़ार की पकड़ रखती थीं। उनकी नजरों में कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं था, न ही कोई व्यक्ति अमीर या गरीब। घर के खर्च में से बचाए पैसों को, चिंटू के दोस्तों के अभिभावकों को बिना ब्याज लिए उधार पर देकर उन्होंने नए काम शुरू करवाने का प्रस्ताव रखा।

मां ने रानी, गुड्डी, पिंकी, तरूण, विनोद और राजू के पापा से कम लागत में माल खरीद कर बेचने की बात की। पहले तो सभी ने इस काम के लिए मना कर दिया पर फिर मां के बहुत समझाने-बुझाने पर राजी हुए।

मां ने उन्हें मिट्टी के घड़े, डिजाइनर दीपक, हैंडीक्राफ्ट के बंदनवार, लक्ष्मीजी और गणेशजी की मूर्तियों की आदि दुकानें लगाने की सलाह दी। इन छोटी दुकानों में माल सस्ता था और लागत कम थी और दीवाली के समय ऐसे माल की खपत होने की संभावना अधिक थी। कलात्मक रंगोली, इलैक्ट्रिक लाइट्स भी एक अच्छा विकल्प था।

मां से पैसे लेकर सभी ने काम-धंधे शुरू किए। सोसायटी में उनके विज्ञापन मां ने ही कम्प्यूटर से निकाल के लगा दिए। इंटरनेट पर भी इन दुकानों की जानकारी डाल दी। घर के बाहर टेबल बिछा के काम-धंधा शुरू किया गया। बच्चों ने भी हैंडीक्राफ्ट आईटम बनाने में मम्मी-पापा की मदद की।

चिंटू की सोसायटी से सटी और भी कालोनियां थीं। लोगों ने विज्ञापन देख के आना शुरू किया। दीवाली के समय में काम आने वाले सामान था। इसलिए जल्दी सामान बिकना शुरू हो गया। अधिकांश लोग प्राइवेट फर्म के वर्कर थे जिन्हें छंटनी कर दिया गया था सो फुल टाईम घर बैठने के कारण सामान भी जल्दी और ज्यादा बना रहे थे।

मां के आग्रह पर चिंटू के सोसायटी वालों ने, मिलने वालों ने दीवाली की खरीददारी यहीं से की। कोरोना काल में सभी इन लोगों की आर्थिक स्थिति और मजबूरी समझ रहे थे। इसलिए मदद के उद्देश्य से भी लोग उन्हें लगातार बढ़ावा दे रहे थे। चूंकि सामान की क्वालिटी अच्छी थी और रेट ठीक-ठाक, तो बिक्री और मुनाफा अच्छा हुआ। सभी ने मां से उधार लिए पैसे वापस कर दिए।

दीवाली की रात कोई भी गांव नहीं गया। चिंटू ने दोस्तों के साथ दीवाली मनाई। वह समझ चुका था कि खुशियां बांटने से ही बढ़ती हैं। कॉलोनी का हर घर रोशनी से जगमगाए और आखिरी छोर तक उजाला हो तो ही होती है 'शुभ दीवाली'। सोसायटी से बाहर छोटे मकानों में रहने वालों को अब मां के अगले आइडिया का इंतजार था। ❑

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 04 अप्रैल, 1889 को हुआ था। वह भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएं अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वह अनूठे हिन्दी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और स्वाधीनता के लिए नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वे गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आएं। इसके लिए उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है। इनका निधन 30 जनवरी, 1968 को हुआ था।

दीप से दीप जले

—माखनलाल चतुर्वेदी

सुलग–सुलग री जोत दीप से दीप मिलें
कर–कंकण बज उठे, भूमि पर प्राण फलें।

लक्ष्मी खेतों फली अटल वीराने में
लक्ष्मी बंट–बंट बढ़ती आने–जाने में
लक्ष्मी का आगमन अंधेरी रातों में
लक्ष्मी श्रम के साथ घात–प्रतिघातों में
लक्ष्मी सर्जन हुआ
कमल के फूलों में
लक्ष्मी–पूजन सजे नवीन दुकूलों में।।

गिरि, वन, नद-सागर, भू-नर्तन तेरा नित्य विहार
सतत मानवी की अंगुलियों तेरा हो शृंगार
मानव की गति, मानव की धृति, मानव की कृति ढाल
सदा स्वेद-कण के मोती से चमके मेरा भाल
शकट चले जलयान चले
गतिमान गगन के गान
तू मिहनत से झर-झर पड़ती, गढ़ती नित्य विहान।।

उषा महावर तुझे लगाती, संध्या शोभा वारे
रानी रजनी पल-पल दीपक से आरती उतारे,
सिर बोकर, सिर ऊंचा कर-कर, सिर हथेलियों लेकर
गान और बलिदान किए मानव-अर्चना संजोकर
भवन-भवन तेरा मंदिर है
स्वर है श्रम की वाणी
राज रही है कालरात्रि को उज्ज्वल कर कल्याणी।।

वह नवांत आ गए खेत से सूख गया है पानी
खेतों की बरसन कि गगन की बरसन किए पुरानी
सजा रहे हैं फुलझड़ियों से जादू करके खेल
आज हुआ श्रम-सीकर के घर हमसे उनसे मेल।
तू ही जगत की जय है,
तू है बुद्धिमयी वरदात्री
तू धात्री, तू भू-नव गात्री, सूझ-बूझ निर्मात्री।।

युग के दीप नए मानव, मानवी ढलें
सुलग-सुलग री जोत! दीप से दीप जलें।

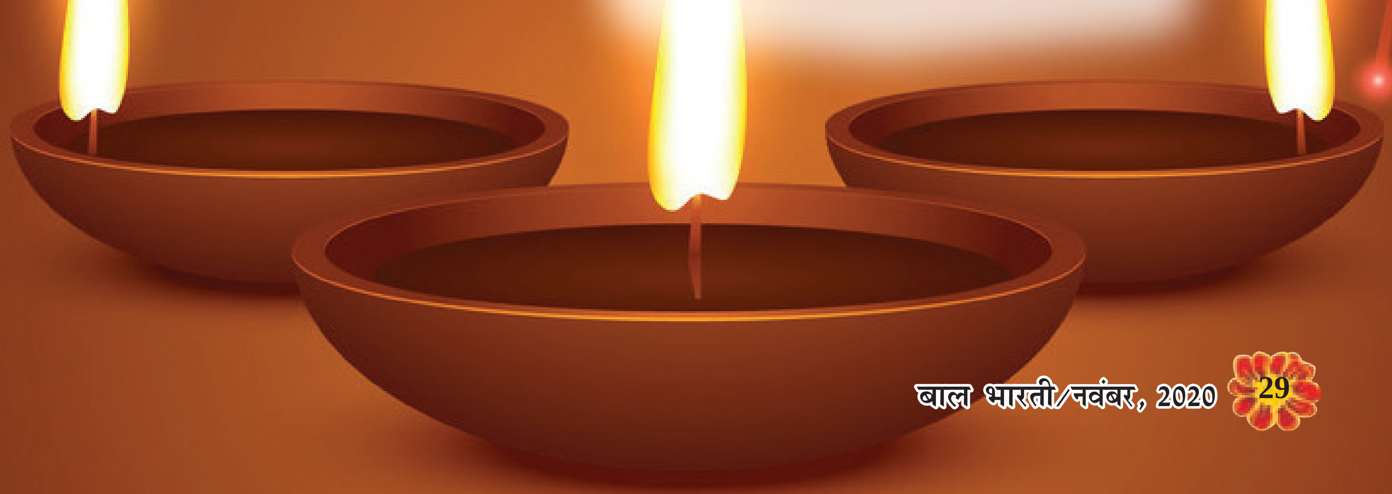

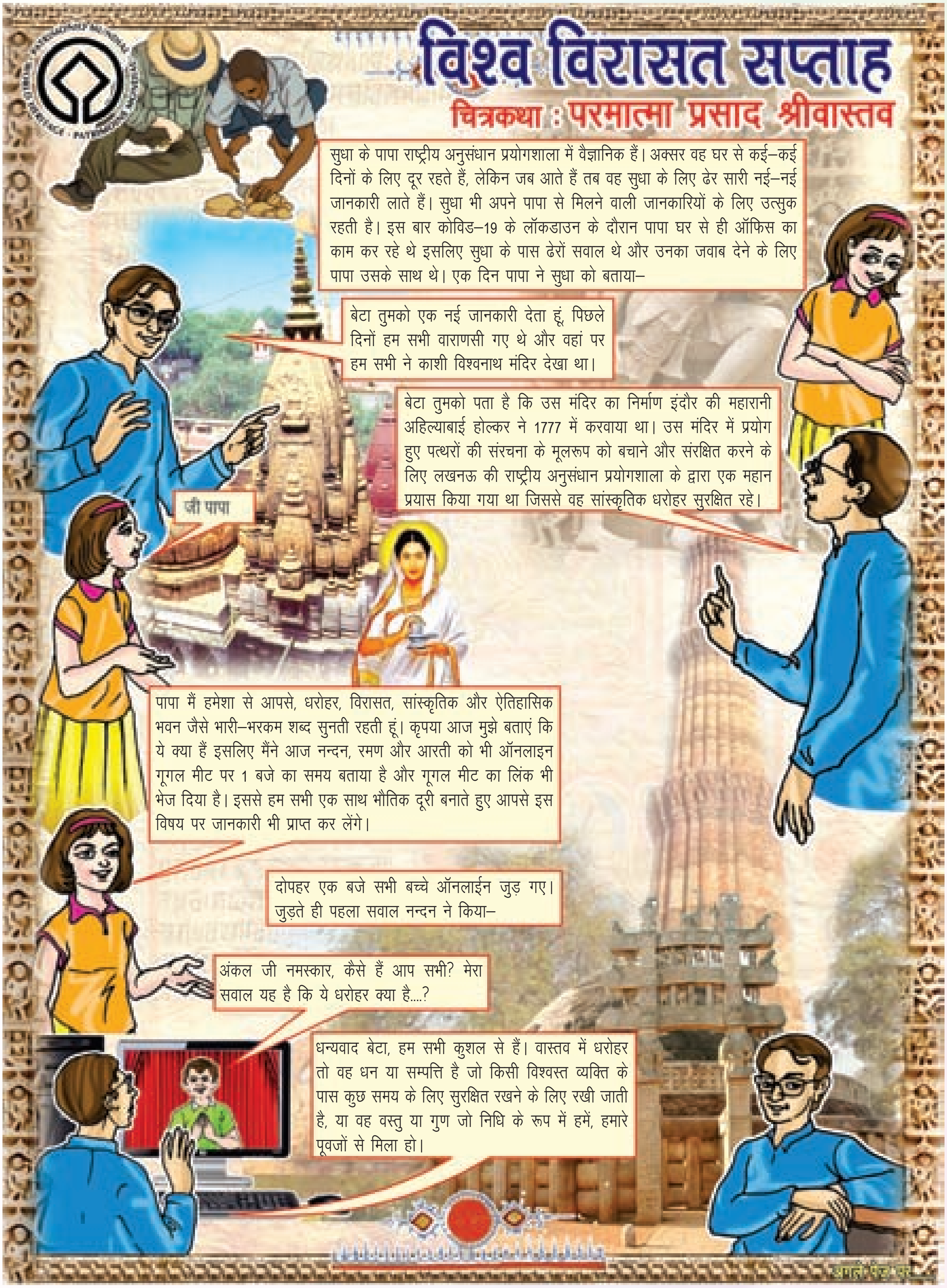
विश्व विरासत सप्ताह
चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव
सुधा के पापा राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला में वैज्ञानिक हैं। अक्सर वह घर से कई–कई दिनों के लिए दूर रहते हैं, लेकिन जब आते हैं तब वह सुधा के लिए ढेर सारी नई–नई जानकारी लाते हैं। सुधा भी अपने पापा से मिलने वाली जानकारियों के लिए उत्सुक रहती है। इस बार कोविड–19 के लॉकडाउन के दौरान पापा घर से ही ऑफिस का काम कर रहे थे इसलिए सुधा के पास ढेरों सवाल थे और उनका जवाब देने के लिए पापा उसके साथ थे। एक दिन पापा ने सुधा को बताया–
बेटा तुमको एक नई जानकारी देता हूं, पिछले दिनों हम सभी वाराणसी गए थे और वहां पर हम सभी ने काशी विश्वनाथ मंदिर देखा था।
जी पापा
बेटा तुमको पता है कि उस मंदिर का निर्माण इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने 1777 में करवाया था। उस मंदिर में प्रयोग हुए पत्थरों की संरचना के मूलरूप को बचाने और संरक्षित करने के लिए लखनऊ की राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला के द्वारा एक महान प्रयास किया गया था जिससे वह सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहे।
पापा मैं हमेशा से आपसे, धरोहर, विरासत, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भवन जैसे भारी–भरकम शब्द सुनती रहती हूं। कृपया आज मुझे बताएं कि ये क्या हैं इसलिए मैंने आज नन्दन, रमण और आरती को भी ऑनलाइन गूगल मीट पर 1 बजे का समय बताया है और गूगल मीट का लिंक भी भेज दिया है। इससे हम सभी एक साथ भौतिक दूरी बनाते हुए आपसे इस विषय पर जानकारी भी प्राप्त कर लेंगे।
दोपहर एक बजे सभी बच्चे ऑनलाईन जुड़ गए। जुड़ते ही पहला सवाल नन्दन ने किया–
अंकल जी नमस्कार, कैसे हैं आप सभी? मेरा सवाल यह है कि ये धरोहर क्या है....?
धन्यवाद बेटा, हम सभी कुशल से हैं। वास्तव में धरोहर तो वह धन या सम्पत्ति है जो किसी विश्वस्त व्यक्ति के पास कुछ समय के लिए सुरक्षित रखने के लिए रखी जाती है, या वह वस्तु या गुण जो निधि के रूप में हमें, हमारे पूवजों से मिला हो।
अगले पेज पर

अंकल, वास्तव में नन्दन और हम सभी यह जानना और समझना चाहते हैं कि विश्व विरासत सप्ताह या विश्व विरासत दिवस क्या है?
हां अंकल यह क्या होता है। हमलोग क्या कर सकते हैं...?
पापा मुस्कराए और सुधा की तरफ देखते हुए पूछा–
क्यों बेटा यह सवाल तो तुम्हारा भी होगा ना...? चलो ठीक है बताता हूं।
पृथ्वी जितनी प्राकृतिक रूप से सुंदर है, उतनी ही सुंदर है इस पर हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए गए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मंदिर, भवन, मूर्तियां, पेंटिंग्स, भित्ति चित्र आदि भी। यह सभी केवल एक व्यक्ति, एक राज्य या केवल एक देश तक की सीमित नहीं रहतीं, ये सभी पूरे विश्व के सभी लोगों के लिए हैं।
अच्छा अरे वाह! फिर तो अंकल जी इसको पूरे विश्व के स्तर पर कौन देख–रेख करता होगा और कौन यह सुनिश्चित करता होगा कि ये वस्तुएं धरोहर हैं?
बेटा, विश्व विरासत को सदियों तक संजोकर रखने और भावी पीढ़ी तक इनके महत्व को बताने के उद्देश्य से 19 से 25 नवम्बर तक विश्व विरासत या विश्व धरोहर सप्ताह मनाया जाता है। ऐसी तमाम धरोहर हैं जो सदियों से पृथ्वी पर मौजूद हैं और इतिहास की साक्षी हैं। ऐसी जगहों और इमारतों को वर्ल्ड हैरिटेज का दर्जा दिया जाता है और इन्हें इस लिस्ट में डालने का काम यूनेस्को द्वारा किया जाता है।
जी बेटा, इसीलिए इन अनेक धरोहरों को सहेज कर रखने की जिम्मेदारी न केवल उस देश की होती है बल्कि पूरा विश्व एकजुट होकर अपने इतिहास की इन निशानियों को संभालने की जिम्मेदारी निभाता है। यूनाइटेड नेशनस एजूकेशन साइंटिफिक एण्ड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन द्वारा हैरिटेज के तौर पर चुनी गई इन जगहों को सहेजकर रखने का जिम्मा यूनेस्को का होता है।
लिस्ट में डालने का काम यूनेस्को द्वारा किया जाता है...? फिर तो अंकल जी यह तो बेहद अहम और मुश्किल कार्य है।
जी अंकल और यूनेस्को विभिन्न देशों के साथ मिलकर इन हैरिटेज साइट्स की देखभाल करता है।
शाबाश बेटा! और एक बात इन जगहों का रख–रखाव के खर्चे के लिए 'वर्ल्ड हैरिटेज फंड' भी यूनेस्को द्वारा मिलता है और यूनेस्को को यह धन विभिन्न देशों के सहयोग से मिलता है।
लेकिन अंकल जी इस तरह के कार्यक्रमों में हम बच्चों की क्या भूमिका हो सकती है...? हम कैसे इस तरह के कार्यक्रमों में अपना सहयोग दे सकते हैं?
बच्चों आप ही लोग तो इसकी मुख्य कड़ी हो। वास्तव में ये धरोहरें तो आप लोगों के लिए ही संरक्षित एवं सुरक्षित की जा रही हैं और आप बच्चे ही तो बड़े होकर इन सभी धरोहरों को आगे आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित सौंपोगे।
अरे वाह पापा.... लेकिन हम क्या करें? क्या हम भी आपकी तरह ही इस तरह भवन और मूर्तियां खोजें....?

हंसते हुए कर सकते हो... लेकिन आप लोगों के लिए पहला काम यह है कि अभी तक जितने ज्ञात और चिह्नित स्मारक आदि हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए आप सभी के मन में विशेष सम्मान हो, आप सभी इस सप्ताह के दौरान अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न नारे लिख सकते हैं, जानकारियां दे सकते हैं।
और आप सभी संस्कृति और पुरातत्व विभाग के साथ–साथ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा आयोजित कुछ कार्यक्रमों में जैसे सेमिनार, फोटो प्रदर्शनी, पुस्तक मेला और अन्य प्रतियोगी कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दे सकते हैं।
और हां, हम सभी बच्चे एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कर सकते हैं।
जी अंकल इस तरह से हम देश की सांस्कृतिक धरोहरों और स्मारकों के संरक्षण और सुरक्षा के बारे में लोगों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस से लोगों में जागरूकता भी फेलेगी। अपने देश की प्राचीन संस्कृति और परंपरा को जानने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि विविध अमूल्य सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा की जाए और उन्हें संरक्षित किया जाए।
वाह नन्दन तुम तो एक वक्ता की तरह बोलने लगे हो, लगता है मेरे साथ का असर है... अब लगे हाथ यह भी बताओ अपने देश में यूनेस्को द्वारा स्वीकृत कितनी विरासत हैं...?
वो क्या है ना..... कि इसे अंकल ही बताएंगे...।
कुछ और बातें कि हमें विश्व विरासत सप्ताह कैसे मनाना चाहिए, आप पूरे वर्ष यह कार्य कर सकते हैं....
1. अपने घर के आस–पास के किसी पुरातत्व स्थल या भवन पर जाएं। वहां चाहे प्रवेश शुल्क ही क्यों न हो, फिर भी आप वहां जरूर जाएं और घूमें।
2. यदि आपके घर के बड़े–बुजुर्ग साथ में होंगे तो वे आपको वहां के इतिहास के बारे में बताएंगे। इससे आपको किसी जगह, किले की या मकबरे के बारे में कई रोचक तथ्यों का पता चलेगा।
3. कई बार सरकार इस दिन किसी भी ऐतिहासिक विरासत के संदर्भ में डाक टिकट या पोस्टर आदि जारी करती है, आप सभी इसे इकट्ठा करें।
4. प्रमुख और सबसे महत्वपूर्ण बात कि आप पुरातत्व स्थल पर ना तो स्वयं कोई गंदगी फैलाएं और ना ही किसी दूसरे को फैलाने दें। यह जागरूकता आप लोग कर सकते हैं।
हां पापा हम लोग इतना तो कर ही सकते हैं।
बहुत अच्छा बच्चो।

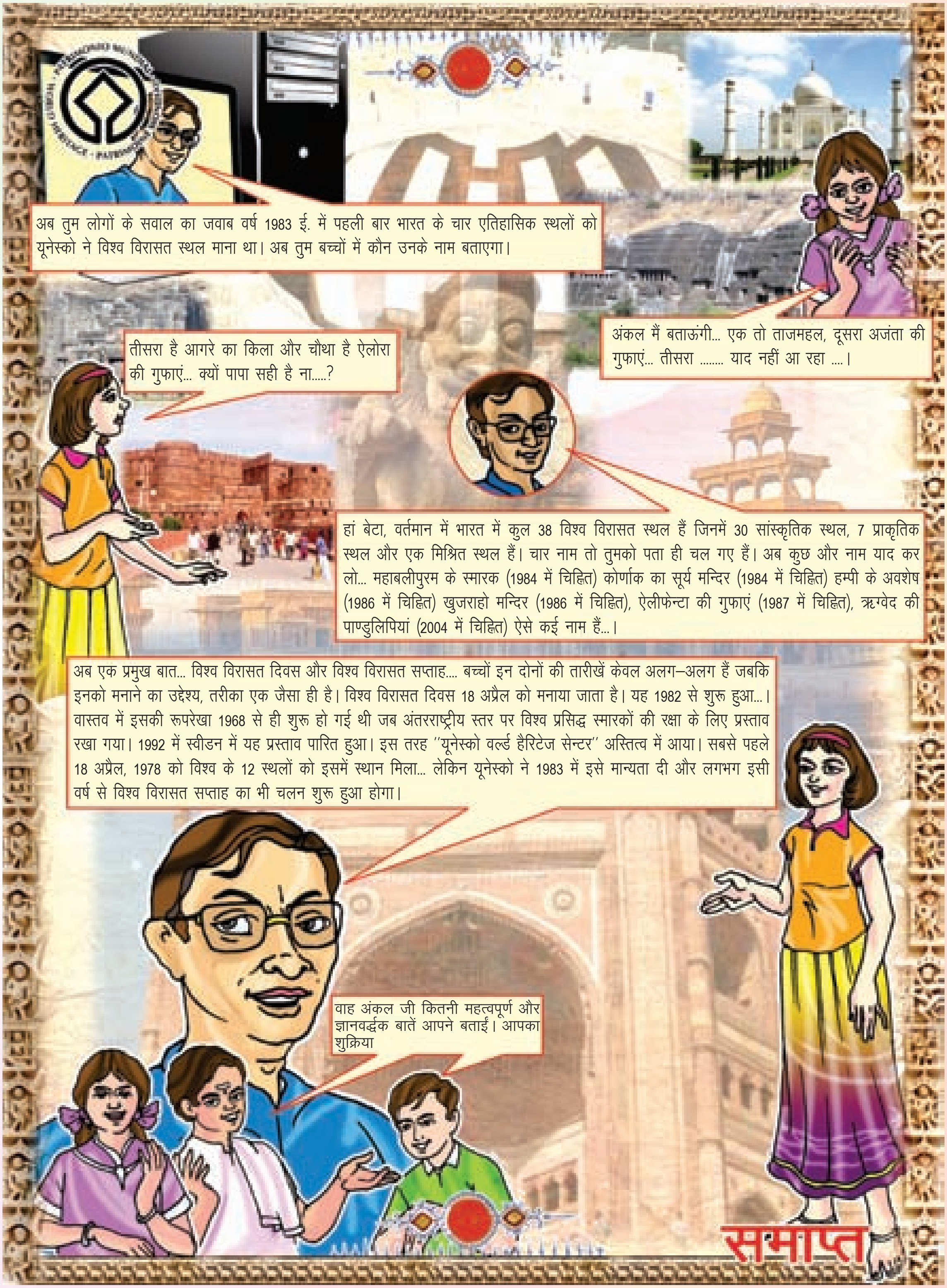

अब तुम लोगों के सवाल का जवाब वर्ष 1983 ई. में पहली बार भारत के चार एतिहासिक स्थलों को यूनेस्को ने विश्व विरासत स्थल माना था। अब तुम बच्चों में कौन उनके नाम बताएगा।
अंकल मैं बताऊंगी... एक तो ताजमहल, दूसरा अजंता की गुफाएं... तीसरा .... याद नहीं आ रहा ....।
तीसरा है आगरे का किला और चौथा है ऐलोरा की गुफाएं... क्यों पापा सही है ना.....?
हां बेटा, वर्तमान में भारत में कुल 38 विश्व विरासत स्थल हैं जिनमें 30 सांस्कृतिक स्थल, 7 प्राकृतिक स्थल और एक मिश्रित स्थल हैं। चार नाम तो तुमको पता ही चल गए हैं। अब कुछ और नाम याद कर लो... महाबलीपुरम के स्मारक (1984 में चिह्नित) कोर्णाक का सूर्य मन्दिर (1984 में चिह्नित) हम्पी के अवशेष (1986 में चिह्नित) खुजराहो मन्दिर (1986 में चिह्नित), ऐलीफेन्टा की गुफाएं (1987 में चिह्नित), ऋग्वेद की पाण्डुलिपियां (2004 में चिह्नित) ऐसे कई नाम हैं...।
अब एक प्रमुख बात... विश्व विरासत दिवस और विश्व विरासत सप्ताह.... बच्चों इन दोनों की तारीखें केवल अलग–अलग हैं जबकि इनको मनाने का उद्देश्य, तरीका एक जैसा ही है। विश्व विरासत दिवस 18 अप्रैल को मनाया जाता है। यह 1982 से शुरू हुआ...। वास्तव में इसकी रूपरेखा 1968 से ही शुरू हो गई थी जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व प्रसिद्ध स्मारकों की रक्षा के लिए प्रस्ताव रखा गया। 1992 में स्वीडन में यह प्रस्ताव पारित हुआ। इस तरह ''यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज सेन्टर'' अस्तित्व में आया। सबसे पहले 18 अप्रैल, 1978 को विश्व के 12 स्थलों को इसमें स्थान मिला... लेकिन यूनेस्को ने 1983 में इसे मान्यता दी और लगभग इसी वर्ष से विश्व विरासत सप्ताह का भी चलन शुरू हुआ होगा।
वाह अंकल जी कितनी महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्द्धक बातें आपने बताईं। आपका शुक्रिया
समाप्त

कुम्हार की दीवाली

–मंजरी शुक्ला

"मम्मी, कुम्हार क्या होता है?'' मेरे बेटे चुन्नू ने किताब में बने मिट्टी के दिए के एक चित्र को देखते हुए पूछा–

''कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है।'' मेरी पत्नी ने जवाब दिया। मिट्टी के बर्तन भी बनते हैं क्या?

''पर हमारे घर तो मिट्टी के बर्तन हैं ही नहीं।'' बेटे ने दूसरा सवाल दागा।

पत्नी बोली– ''वह सिर्फ़ मिट्टी के बर्तन ही नहीं बनाता बल्कि बहुत सारी चीज़ें बनाता है।''

चुन्नू ने तुरंत अपनी किताब बंद कर दी और बोला–''क्या–क्या बनाता है वह?''

मैंने देखा कि मेरी पत्नी सकपका गई थी।

उन्हें चुप देख चुन्नू बोला– ''आपको भी नहीं पता क्या?''

अपने सामान्य ज्ञान पर गहरी चोट होती देख पत्नी ने तुरंत याद करते हुए कहा– ''कुम्हार मिट्टी की गुल्लक, रंग–बिरंगे खिलौने, मटका, सुराही और दही रखने का सकोरा बनाता है।''

चुन्नू ने अपनी मां का चेहरा ऐसे देखा जैसे वह दूसरे ग्रह में रहने वाले प्राणियों के बारे में बता रही हो।

''मैंने तो आज तक ये सब देखा ही नहीं ना, अपने पास ना ही अपने दोस्तों के पास।'' चुन्नू ने अचरज से अपनी आंखें फैलाते हुए कहा।

अब मेरी पत्नी झुंझला गई और नाराज़ होते हुए बोली–''अब जाकर अपने पापा से पूछ, उनके पिताजी कुम्हार ही थे।''

चुन्नू सहमता हुआ बोला– ''सच मां, आपने कभी बताया नहीं। पर मां आप ही ने तो मुझे प्लास्टिक की गुल्लक दिलाई है, एक भी खिलौना मेरे पास मिट्टी का नहीं है। मटका, सुराही

अपने घर में है ही नहीं और दही तो आप स्टील के बर्तन में जमाती हो।''

मेरी पत्नी का चेहरा उतर गया और वह वहां मुझे खड़ा देख तुरंत उठकर चली गई।

अब मेरी बारी थी, सो चुन्नू दौड़ता हुआ आया और बोला– ''पिताजी, दादाजी कुम्हार थे तो आपने कभी बताया क्यों नहीं।''

पिताजी की याद करते ही मेरी आंखों में आंसू आ गए और मैं आंसू पोंछते हुए उसे अनसुना कर छत पर आ गया।

दूर डूबते सूरज के देखकर आज अपने गांव और पिताजी की हर बात याद आ रही थी।

सूरज की तपती धूप जहां लोगों को घर में दुबकने पर मजबूर कर देती थी, वहीं कुम्हार के चेहरे पर मुस्कान ला देती थी।

मुझे आज भी याद है जब मैं करीब सात साल का था तो पिताजी के साथ चिकनी मिट्टी खोदने नदी के किनारे जाता था। मेरा पसंदीदा काम था चिकनी मिट्टी से छोटे–छोटे कंकड़–पत्थर अलग करके मिट्टी का ढेर बनाना और फिर उस पर कूदना।

पिताजी उन्हें देख मुस्कुराते और कहते– ''इस मिट्टी से कभी अलग नहीं होना।''

मैं उनकी बात सुनकर हंस देता और उनके साथ मिट्टी के ढेर को बोरी में भरने लगता।

घर लौटते समय पिताजी और वह ढेर सारी बातें करते।

उनमें राजा–रानी, परी, बौने और ढेर सारी जादुई कहानियां होती पर वह कहीं ना कहीं से उनमें मिट्टी का राजा, मिट्टी की रानी और मिट्टी की गुड़िया लाना ना भूलते।

शायद इसीलिए जब पिताजी मिट्टी के खिलौने बनाते तो मैं उनकी दौड़–दौड़ कर मदद करता और हर खिलौने में कहानी तलाशता।

शेर, भालू, कुत्ता, आदमी–औरत, बैल, घंटी और भी ना जाने कितनी सारी वस्तुएं जब बनकर तैयार हो जाती तो मुझे एक गर्व की अनुभूति होती।

सबसे ज़्यादा मजा तो तब आता जब पिताजी घड़े बनाते।

छोटे घड़े, बड़े घड़े, कई बार तो इतने बड़े घड़े कि लोग उन्हें बैलगाड़ी में लादकर ले जाते।

वह अपनी आंखें फैलाकर उन सबको अचरज से देखा करता।

एक दिन उसने पिताजी से पूछा– ''क्या इनके घर के सब लोगों को तैरना आता है?''

पिताजी उस समय मिट्टी के हिरन को बनाकर उसे रंग रहे थे। उनके हाथ अचानक ही रुक गए और वह बोले– ''क्यों भला, उनके तैरने का ध्यान तुझे कैसे आया?''

''इतने बड़े मटके के अंदर से पानी निकालने में अगर कभी कोई अंदर गिर जाए तो डूब नहीं जाएगा।''

पिताजी का हाथ अचानक ही रुक गया और वह मुझे भौंचक्के से देखते रहे।

उसके बाद वह इतना हंसे, इतना हंसे कि मां को अंदर से आकर उन्हें पानी पिलाना पड़ा।

पिताजी ने घूम–घूम कर यह बात सबको बताई और जिसने सुना वह हंसे बिना नहीं रह सका।

मुझे सालों बाद पता चला कि वे घड़े अनाज रखने के काम में आते थे।

जब दीवाली आती थी तो पिताजी को सांस लेने की भी फुर्सत नहीं होती थी। ऐसा लगता था कि हमारा घर बस अड्डा बन गया है। सुबह से शाम तक इतने लोग आ जाते थे कि उस भीड़ में मुझे ही धकियाकर घर के बाहर भेज दिया जाता। वह तो मां थी जिन्हें कम से कम भरी दोपहर को खाने के समय मेरी याद आ जाती और वह भीड़ को चीरती हुई मेरा हाथ पकड़कर अंदर ले जाती थी।

कोई भगवान जी की मूर्तियां ले रहा होता था तो किसी को

खील-खिलौने रखने के लिए मिट्टी के सकोरे चाहिए होते थे। किसी को दीये चाहिए होते थे तो किसी को मिट्टी के हाथी।

पिताजी दिन भर मां से जब बात नहीं कर पाते थे तो मां ऊपर से तो बनावटी गुस्सा करती पर मन ही मन प्रार्थना करती रहती कि पिताजी का काम हमेशा ऐसे ही चलता रहे।

पर अचानक ही जैसे लोगों ने हमारे घर आना बंद कर दिया।

पिताजी घड़े बनाकर बैठे रहते पर उन्हें खरीदने कोई नहीं आता।

मिट्टी के दीये भी लोग अब गिनकर पांच या दस ले जाते।

इतने सुंदर रंग-बिरंगे राजा रानी और खूबसूरत जानवर धूल में उलटे पड़े रहते।

पिताजी की आंखों में बेबसी और लाचारी साफ़ नज़र आती।

हमेशा हंसती-मुस्कुराती मेरी मां मुझसे छिपकर अकेले में रोया करती

थोड़ा बड़ा होने पर मुझे समझ में आ गया कि लोगों ने फ्रिज़ खरीद लिए, स्टील और प्लास्टिक की सुंदर कांच लगी गुल्लक खरीद ली, प्लास्टर ऑफ़ पेरिस के भगवान लोगों के घर में जगह लेने लगे और यहां तक कि दीयों की जगह अपने घर पर बिजली की झालरें लगाने लगे।

पिताजी सूनी आंखों से लोगों का रास्ता देखते। किसी के भी नहीं आने पर सिर पर टोकरी रख मीलों घूमते पर उनका सामान ना बिकता।

हज़ारों रुपये कमाने वाले लोगो को भी मेरे गरीब पिता चोर नज़र आते। वह आधे दाम में चीज़ें खरीदते।

हम धीरे-धीरे बहुत गरीब होते जा रहे थे।

मां अब एक समय खाना खाने लगी।

पिताजी चिंता के मारे खटिया से लग गए। मैं डरा-सहमा सा रहने लगा। मुझे लगता कि कहीं से कोई आकर पिताजी के घड़े खरीद ले और उन्हें ढेर सारे पैसे दे दे। मैं पिताजी का अच्छे से अच्छा इलाज कराऊं।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। एक दिन पिताजी ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा- ''बेटा, मैं अब शायद तेरे साथ और नहीं रह पाऊंगा पर जब तक यह चाक तेरे साथ है तू समझना मैं तेरे साथ ही हूं।'' और फिर कभी नहीं उठे।

मैं कुछ कहता इससे पहले ही पिताजी चले गए। मैंने पास खड़ी मां की ओर देखा। मां जैसे पत्थर की हो गई थी।

पिताजी के ना रहने पर मैं मां और चाक को लेकर शहर आ गया। मेहनत की, मजदूरी की पर अपनी पढ़ाई जारी रखी। चाक पर फिर कभी कोई काम नहीं हो सका।

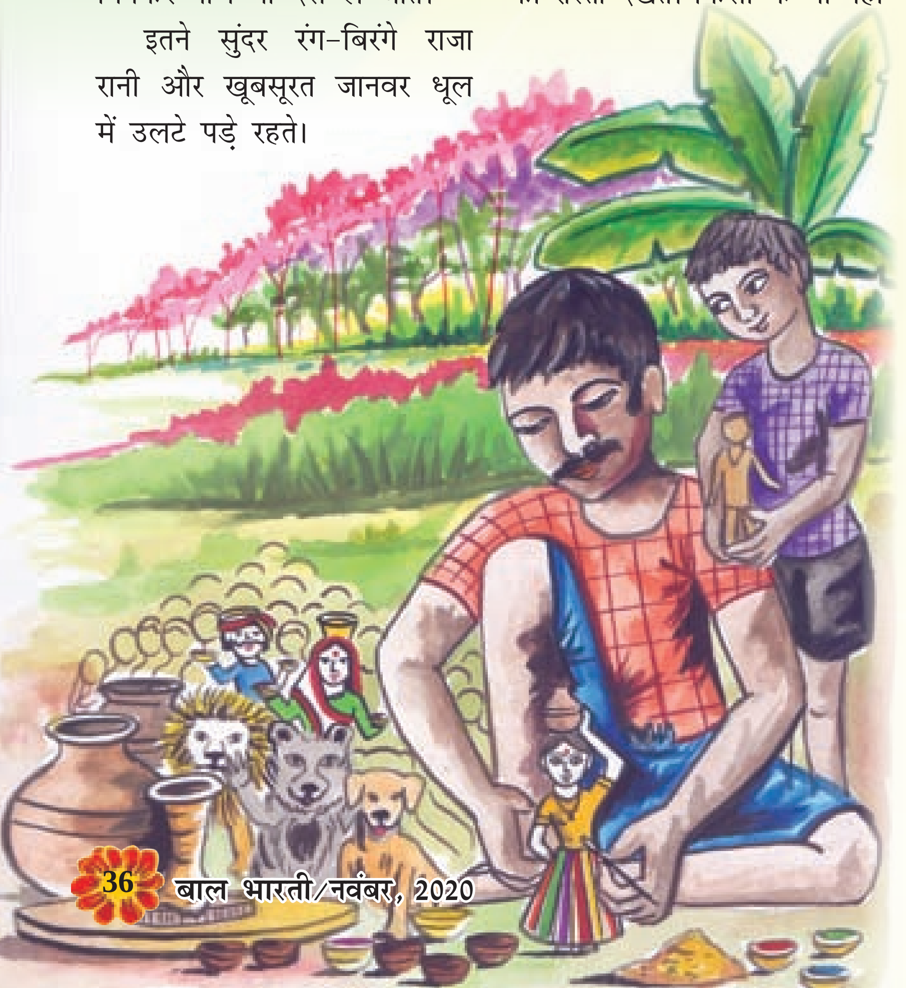

आज एक स्कूल में शिक्षक होने के बाद भी मैं सात साल के बच्चे के सवाल से बचकर छत पर आ गया।

तभी मैंने चुन्नू और मां के आने के आहट सुनी।

आंसू पोंछते हुए मैंने पीछे देखा तो चुन्नू मां का हाथ पकड़े खड़ा था।

मैं मुस्कुराया तो वह दौड़ते हुए मेरे पास आकर बोला–''पापा, दादी कह रही है कि हम आज ही बाज़ार में घड़ा, सुराही, मिट्टी की गुल्लक और मिट्टी के राजा–रानी लेने चलेंगे। मैं अब सब दोस्तों को भी दिखाऊंगा। आप चलोगे ना खरीदने?''

''मैं नहीं खरीदूंगा।'' मैंने शांत स्वर में उत्तर दिया

मां और चुन्नू का चेहरा उतर गया।

मां वापस जाने को जैसे ही मुड़ी, मैं बोला–''क्योंकि हम खुद मिट्टी के बर्तन बनाएंगे।''

''सच! पापा हम बनाएंगे।'' चुन्नू ख़ुशी से उछलता हुआ बोला।

मैंने दुछत्ती पर रखे चाक को डबडबाई नज़रों से देखा और कहा–''हां, हम बनाएंगे''

मुझे लगा जैसे पिताजी मुस्कुरा रहे हों।

और सामने खड़ी मेरी मां हिलक–हिलक कर रो रही थी।❑

कोरोना के संग जीना

–नरेन्द्र सिंह नीहार

घर में कब तक छुपे रहेंगे,
बाहर होगा जाना।
जीवन चला चली का खेला,
खाना और कमाना।
भीड़–भाड़ से बचकर भैया,
चलना और संभलना।
निश्चित दूरी सदा जरूरी,
रक्षाकवच समझना।
थोड़े हटकर ज्यादा डटकर,
करतब नए दिखाना।
काढ़ा पीना कसरत करना,
हंसना और मुस्काना।
कोरोना की पिच पर यारों,
रोज़ बांउसर आती।
खबरें भी सब खतरनाक हैं,
पल–पल हमें डराती।
साहस संबल और सजगता,
बनें जीत का गाना।
जयतु जयतु जयघोष हमारा,
आगे बढ़ते जाना।

दादी की पार्टी

–मोनिका गुप्ता

छोटे ने कहा, "भैया, दादी कई बार कह चुकी हैं कि कभी मुझे भी अपने साथ होटल ले चला करो।" गौरव बोला, "ले तो जाएं पर चार लोगों के खाने पर कितना खर्च होगा। याद है पिछली बार जब हम तीनों ने डिनर लिया था, तब आठ सौ का बिल आया था। हमारे पास अब इतने पैसे कहां बचे हैं?" पिंकी ने बताया, "मेरे पास जेबखर्ची के कुछ पैसे बचे हुए हैं।" गौरव ने कहा, मेरे पास भी कुछ पैसे हैं। तीनों ने मिलकर तय किया कि इस बार दादी को भी लेकर चलेंगे, पर मंहगी पनीर की सब्जी की जगह मिक्सवैज मंगवाएंगे और आइसक्रीम भी नहीं खाएंगे।

छोटू, गौरव और पिंकी तीनों दादी के कमरे में गए और बोले, "दादी इस संडे को लंच के लिए बाहर जाएंगे, चलोगी हमारे साथ।" दादी पहले तो खुश हो गई लेकिन फिर उदासी भरे मन से बोली, "अरे....नहीं-नहीं बच्चों, ...अब इस बुढ़िया के लिए क्या घर और क्या बाहर? तुम सब मेरे साथ परेशान हो जाओगे, मैं घर पर ही ठीक हूं। तुम लोग जाओ।"

उनके इतना कहते ही पिंकी दादी के गले लगते हुए बोली– "अरे हमारी प्यारी दादी.....बुढ्ढे होंगे आपके दुश्मन..." हम तो आपको लेकर ही जाएंगे, सुबह तैयार हो जाना।

संडे को दादी सुबह से ही बहुत खुश थी। आज उन्होंने अपना सबसे बढ़िया वाला सूट पहना, हल्का-सा मेकअप किया, बालों को एक नए ढंग से बांधा। आंखों पर सुनहरे फ्रेमवाला नया चश्मा लगाया। यह चश्मा उनका मंझला बेटा बनवाकर दे गया था जब वह पिछली बार लंदन से

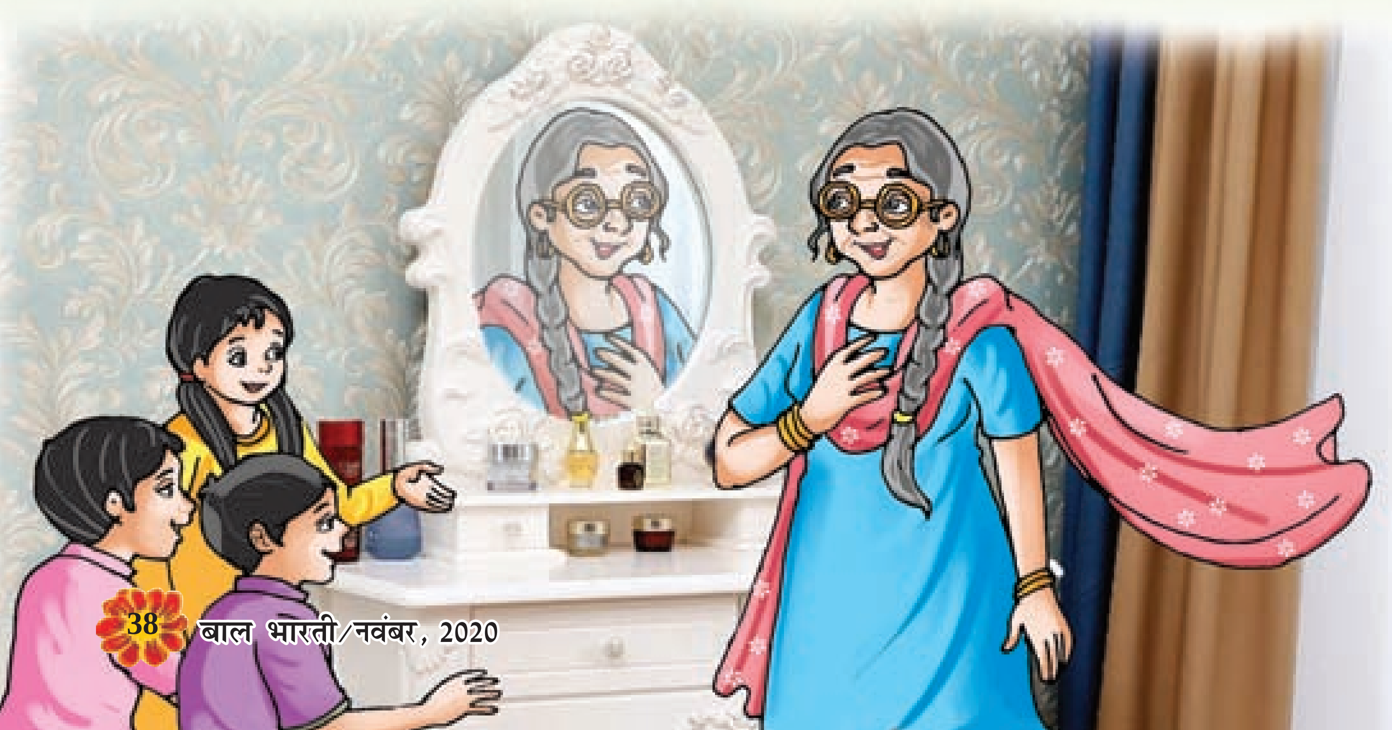

आया था, किन्तु वह उसे पहनती नहीं थीं। कहती थीं, इतना सुंदर फ्रेम है, पहनूंगी तो पुराना हो जाएगा। आज दादी शीशे में खुद को अलग-अलग नज़रिए से कई बार निहार चुकी थीं और खुश हो रही थीं।

बच्चे दादी को बुलाने आए तो पिंकी बोली, ''अरे वाह दादी, आज तो आप गज़ब ढा रही हो।'' गौरव ने कहा, ''आज तो दादी ने गोल्डन फ्रेम वाला चश्मा पहना है। क्या बात है दादी कोई मिलने आ रहा है क्या?'' दादी शर्माकर बोली, ''धत्''।

होटल में सेंटर टेबल पर चारों बैठ गए। दादी आज बहुत खुश थीं। कितने ही किस्से उन्होंने अपने स्कूल-कॉलेज के सुना डाले थे। बहुत दिनों बाद शायद वह आज खुलकर आनंद उठा रही थीं। थोड़ी देर बाद वेटर आया, बोला, ''आर्डर प्लीज।'' अभी गौरव बोलने ही वाला था कि दादी बोली, ''आज आर्डर मैं करूंगी क्योंकि आज की स्पेशल गेस्ट मैं हूं।'' दादी ने लिखवाया- दालमखनी, कढ़ाई पनीर, मलाईकोफ्ता, रायता, वेजिटेबल सलाद, पापड़, नान और मिस्सी रोटी। हां, खाने से पहले चार सूप भी।

तीनों बच्चे एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे। थोड़ी देर बाद खाना टेबल पर लग गया। खाना स्वादिष्ट था, जब सब खा चुके तो वेटर फिर आया, ''मीठे में कुछ मैम।'' दादी ने कहा, ''हां चार कप आइसक्रीम और चार गुलाब जामुन।'' तीनों बच्चों की हालत खराब, अब क्या होगा, दादी को मना भी नहीं कर सकते पहली बार आईं हैं। तीनों बच्चे मन ही मन अपनी जेब के पैसों का गणित लगा रहे थे।

बिल आया, इससे पहले गौरव उसकी तरफ हाथ बढ़ाता, बिल दादी ने उठा लिया और कहा, ''आज का पेमेंट मैं करूंगी। बिल 1500 रुपये का था। दादी ने फौरन अपने पर्स से 2000 रुपये निकाले और वेटर को दे दिए। बच्चे हैरान हो गए कि दादी के पास इतने पैसे कहां से आए? जब वेटर बाकी के पैसे लौटाने आया तो उसमे से भी

दादी ने 50 रुपये उसे टिप के तौर पर दे दिए।

आखिरकार गौरव ने पूछ ही लिया "दादी, आपने पैसे क्यों दिए। यह तो हम बच्चों की तरफ से पार्टी थी। दादी बच्चों से बोली– "मुझे तुम्हारे पैसों की नहीं, तुम्हारे समय की जरूरत है। तुमसे बातें करना, तुम्हारी बातें सुनना मुझे अच्छा लगता है। मैं पूरा दिन अपने कमरे में अकेली पड़े-पड़े बोर हो जाती हूं। टी.वी. या मोबाईल में भी सारा दिन क्या देखूं। आज तुम तीनों ने मेरे साथ समय बिताया तो मुझे बहुत अच्छा लगा। बोलो बच्चो क्या आगे भी अपना थोड़ा-सा समय मुझे दोगे," कहते-कहते दादी की आवाज भर्रा गई।

पिंकी अपनी कुर्सी से उठी, उसने दादी को अपनी बांहों में भर लिया और फिर दादी के गले लगकर बोली, "मेरी प्यारी दादी जरूर देंगे।" गौरव ने कहा, "यस दादी, हम वादा करते हैं कि आज से रोज आपके पास बैठा करेंगे और अपने मित्रों की तरह आपसे भी गप्प-शप करेंगे। और अब यह तय रहा कि हर महीने के दूसरे संडे को लंच या डिनर के लिए बाहर आया करेंगे और पिक्चर भी देखा करेंगे।"

दादी के होठों पर 1000 वाट की मुस्कुराहट तैर गई, आंखों में फ्लैशलाइट-सी चमक आ गई और चेहरे की झुर्रियां खुशी के कारण नृत्य-सा करती महसूस होने लगीं।

अब दादी अकेली नहीं थीं। उन्हें अपने बच्चों का साथ मिल गया था।

वे सभी एक नई उम्मीद और उत्साह के साथ घर की ओर चल दिए। ❑

वयोवृद्ध ज़िंदगानियां

–ध्रुव सहगल

तजुर्बो भरी झुर्रियों के झरोखे
सुनाते हैं हजारों कहानियां
यादों के बोझ से थकी वे आंखें
जीवन का सच समझाती वे बातें

अब तो हैं नाज़ुक और कमज़ोर
चीजों पर अब नहीं चलता जोर
कम बातों में कितना कुछ कह जाते
चुप रहकर भी समझा जाते

आंखों की कोरों में चमक बाकी है
अपनों को देख मचल भी जाती हैं
नए दौर के साथ चलने की कोशिश
नए ज़माने को जीने की इच्छा वाजिब है

बुजुर्गों बिन घर-चौपाल सूने और खाली
जहां वृद्ध सुखी हों वह घर है भाग्यशाली
दायित्व हमारा कि वे जिएं सम्मान से
जो सदैव आधार हमारे स्वाभिमान-सम्मान के

जिनकी वजह से बचपन का आनंद
फूले-फले निखरे हम
पहचान जुड़ी जिनसे हमारी
हम उनसे, वे छत्र-छाया हमारी

उम्र के इस पड़ाव पे बुजुर्गों को प्यार दें
जैसे हमको मिला हम उन्हें भी वो दुलार दें
आने वाला समाज हमें ही बनाना है
कल हम पर भी बुढ़ापा आना है

लोकपर्व छठ

—श्वेता

गंगा किनारे ढलती सांझ के समय ढेर सारे दिए जगमगा रहे थे। लाइन से सूप, गन्ना और टोकरी पीले कपड़े से ढके थे। रंग-बिरंगे कपड़े में सजे लोग सूर्य के ओर टकटकी लगा कर देख रहे थे। छठ पूजा की छटा ही अलग रहती है। सूर्य और प्रकृति की पूजा का नाम छठ है। यह होली, दीवाली जैसे पूरे देश के सभी प्रांतों का त्योहार नहीं बल्कि छठ मुख्यत: बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई में मनाया जाता है। इन प्रदेश के लोग जहां-जहां गए अपने साथ इस परम्परा को भी आगे बढ़ाया। यही कारण है कि अब छठ पूरे भारत के साथ-साथ विदेशों में भी कहीं-कहीं मनाई जाती है। प्रति वर्ष दीपावली के बाद छठ महापर्व का अनुष्ठान किया जाता है। यह लोक आस्था का महान पर्व है। यह कार्तिक महीने के षष्ठी को मनाया जाता है।

यह पर्व मुख्य रूप से चार दिनों तक चलता है। इसकी शुरुआत चतुर्थी को और समापन सप्तमी को होता है। इसे कार्तिक छठ कहा जाता है। इसके अलावा चैत मास में भी छठ पूजा होती है जिसे चैती छठ कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार देवी उषा को छठी मैया कहा जाता है, इनकी पूजा सूर्यदेव की पूजा के साथ ही साथ की जाती है। ऐसी मान्यता है कि छठ व्रत करने वाले व्यक्ति की सभी मनोकामना पूर्ण होती है। छठी मैया उनके परिवार और संतान की रक्षा करती हैं। छठ की कई कहानियां प्रचलित हैं, उनमें से कुछ हैं-

माता सीता ने भी की थी छठ पूजा

बात त्रेता युग की है। दशानन रावण का वध करके भगवान् राम विजयादशमी के दिन अयोध्या पहुंचे और उनकी वापसी की खुशी में दीपावली का पर्व मनाया जाता है। लंका युद्ध में बहुत सारे लोगों का संहार हुआ था। रावण और उसके भाइयों का प्रभु श्रीराम ने विनाश किया। गुरु और ऋषियों की सलाह पर रावण वध के पाप से मुक्त होने के लिए भगवान् राम ने राजसूय यज्ञ किया। इस यज्ञ में ऋषि मुद्गल भी अयोध्या पधारे।

ऋषि मुद्गल ने माता सीता को कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष षष्ठी को सूर्यदेव के उपासना करने का आदेश दिया। माता सीता ने उनके आश्रम में रहकर छ: दिनों तक भगवान सूर्य की पूजा की। ऐसा माना जाता है कि तभी से इस दिन छठ पर्व मनाया जाने लगा।

दानवीर कर्ण ने भी की थी सूर्य की उपासना और छठ पूजा

महाभारत में भी छठ पूजा और सूर्य पूजा के उदाहरण मिलते हैं। कहा जाता है कि दानवीर कर्ण ने छठ पूजा की शुरुआत की थी। कर्ण को सूर्यपुत्र भी कहा जाता है। वह सूर्य के बहुत बड़े उपासक थे। और अपने द्वार पर आए याचक को दान देते थे वह प्रतिदिन घंटों कमर तक गंगाजल में खड़े होकर सूर्य देव की पूजा-अर्चना किया करते थे भगवान सूर्य और छठी माता की कृपा से वह एक महान योद्धा बने।

द्रौपदी ने भी की थी छठ पूजा

जब पांडव जुए में सब कुछ हार गए थे, तब द्रौपदी ने छठ पूजा की थी। छठ पूजा के उपरांत इसका फल मिला और पांडवों को अपना राजपाट वापस मिल गया और उन्होंने बहुत लंबे समय तक हस्तिनापुर पर राज किया।।

राजा प्रियवंद और मालिनी

एक कथा के अनुसार राजा प्रियवद की कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनाई गई खीर खाने के लिए दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परंतु वह मृत पैदा हुआ। प्रियवद पुत्र को लेकर श्मशान गए और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उसी समय भगवान की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृत्ति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूं। राजन तुम मेरा पूजन करो तथा और लोगों को भी प्रेरित करो। राजा ने पुत्र इच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को

हुई। कथा के अनुसार छठ देवी भगवान सूर्यदेव की बहन हैं, जिनकी पूजा के लिए छठ मनाया जाता है। छठी मैया को प्रसन्न करने के लिए भगवान सूर्य की आराधना की जाती है। छठी मैया का ध्यान करते हुए लोग मां गंगा-यमुना या किसी नदी के किनारे इस पूजा को मनाते हैं। इसमें सूर्य की पूजा अनिवार्य है साथ ही किसी नदी में स्नान करना भी।

इस पर्व में पहले दिन घर की साफ-सफाई की जाती है। उस दिन व्रत करने वाले और घर के सभी लोग पूरी साफ-सफाई से नहाते हैं और चावल और चना दाल लौकी डाल कर बनाई और खाई जाती है। इसे 'नहाय खाय' बोला जाता है। पूजा का सामान टोकरी, सूप, छिलके वाला नारियल, दीया, सिंदूर, गन्ना, गगरा निम्बू फल इत्यादि ख़रीदे जाते हैं। दूसरे दिन खरना का कार्यक्रम होता है जिसमें गुड़ से बनी खीर और रोटी लकड़ी पर पकाई जाती है। छठी मैया को यह प्रसाद चढ़ाए जाते हैं और व्रत करने वाले यही प्रसाद खाने के साथ ही पानी ले लेते हैं, उसके बाद वर्ती पानी नहीं पीते। उनका निर्जला उपवास शुरू हो जाता है। तीसरे दिन प्रसाद का ठेकुआ और चावल का लड्डू बनाया जाता है और प्रसाद का सूप तैयार किया जाता है। सूर्यास्त होते ही सारे पकवानों को बड़े-बड़े बांस के डालों में भरकर निकट घाट पर ले जाया जाता है। नदियों में ईख का घर बनाकर उनपर दीप भी जलाए जाते हैं। व्रत करने वाले सारे स्त्री और पुरुष जल में स्नान कर इन डालों को और अपने हाथों में उठाकर षष्टी माता और भगवान सूर्य को अर्ग देते हैं। सूर्यास्त के पश्चात अपने-अपने घर वापस आकर सह-परिवार रात भर सूर्य देवता का जागरण किया जाता है। इस जागरण में छठ के गीतों का अपना एक अलग ही महत्व है। कार्तिक शुक्ल सप्तमी को सूर्योदय से पहले ब्रह्म मुहूर्त में सायं काल की भांति डालों में पकवान, नारियल और फलदान रख नदी के तट पर सारे वर्ती जमा होते हैं। इस दिन व्रत करने वाले स्त्रियों और पुरुषों को उगते हुए सूर्य को अर्ग देना होता है। इसके बाद छठ व्रत की कथा सुनी जाती है और कथा के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है। सारे वर्ती इसी दिन प्रसाद ग्रहण कर पारण करते हैं। ❑

नई शुरुआत

—प्रियंका

रविवार का दिन था ऋषि बड़े आराम से उठा। छुट्टी के दिन थोड़ी देर से उठने की इजाज़त थी लेकिन उठने के साथ ब्रश करने के नियम में कोई ढील नहीं थी। आंखे मलते हुए जब ऋषि का हाथ टूथब्रश पर पहुंचा तो एकाएक ऋषि को लगा कि यह मैंने क्या उठा लिया है? फिर ध्यान से देखा तो नज़र आया बहुत ही अलग दिखने वाला टूथब्रश। लकड़ी की हैंडल थी, साथ ही ऊपरी हिस्से का ब्रश भी पहले से ज्यादा मुलायम जान पड़ रहा था। पहले मुंह धोया जाए या इस अलग तरह के टूथब्रश के बारे में मम्मी से पूछा जाए।

उसने मम्मी को आवाज़ दी और मम्मी अंतर्यामी की तरह बोली– ''हां ऋषि तुम्हारा ब्रश अलग है। सिर्फ तुम्हारा ही नहीं मैं और पापा भी अब इसी टूथब्रश का इस्तेमाल करने वाले हैं।''

ऋषि ने पूछा–''पर क्यों मम्मा?''

मम्मी ने कहा– ''मुंह धो लो फिर बताती हूं।''

ऋषि ने फटाफट मुंह धोया और पहुंच गया मम्मी के पास। मम्मी ने पूछा– ''कैसा लगा बैंबू टूथब्रश से ब्रश करके?''

ओह! अच्छा तो ये बैंबू यानि कि बांस की लकड़ी से बना टूथब्रश था। वैसे आज ब्रश करने का एहसास अलग था। हैंडल थोड़ी पतली थी और ब्रश ज्यादा मुलायम। ऋषि ने कहा– ''लकड़ी की हैंडल सुंदर है पर क्या मेरे दांत उतने ही अच्छे से साफ होंगे।''

मम्मी ने कहा– ''बिल्कुल होंगे और इसमें चिंता वाली कोई बात नहीं हैं।''

लेकिन ऋषि इस बदलाव के पीछे की वजह समझ नहीं पा रहा था। मम्मी ने ऋषि को दूध पकड़ाया, अपनी चाय ली और कहा चलो बैठकर आराम से बताती हूं।

मम्मी ने बात शुरू की– ''ऋषि क्या तुम्हें मालूम है मैं, तुम और हम सभी इतने ज्यादा प्लास्टिक से बने सामान का इस्तेमाल कर रहे हैं कि हमारे वातावरण, हमारी धरती और हमारे सागर, इन सबका दम घुट रहा है।''

ऋषि ने कहा- ''आप क्या प्रदूषण की बात कर रही हैं।'' ऋषि को स्कूल में प्रदूषण के बारे में बताया गया था।

मम्मी ने कहा- ''हां ठीक पहचाना तुमने।''

''लेकिन मम्मा प्रदूषण का मेरे टूथब्रश से क्या लेना-देना है?'' -ऋषि ने पूछा।

''बिल्कुल है ऋषि और यही तो मैं तुम्हें समझाना चाहती हूं। क्या तुम जानते हो ऑस्ट्रेलिया के एक छोटे से द्वीप कोको कीलिंग के तट पर जमा हुए समुद्र के कचरे में वैज्ञानिकों को सबसे ज्यादा क्या मिला?''

ऋषि सोच रहा था कि ढेर सारी गंदगी, रेत और सीपियां मिली होगी। लेकिन मम्मी ने जो बताया उसे सुनकर ऋषि आश्चर्यचकित रह गया।

मम्मी ने बात आगे बढ़ाई- ''3,73,000 टूटे टूथब्रश और 9,77,000 पुराने जूते- वही सारा सामान जो हम इस्तेमाल करके फेंक रहे हैं, वह समुद्र तक पहुंच रहा है। ये पानी को तो गंदा कर ही रहा है साथ ही में समुद्र में रहने वाले जीवों को हानि पहुंचा रहा है। कई दुर्लभ कछुए और मछली इन्हें खाना समझकर खा रहे हैं और मर रहे हैं। आयदिन कई समुद्री किनारों पर तड़पती हुई ह्वेल पहुंच रहीं हैं जिनके पेट से कई टन का प्लास्टिक निकाला जा रहा और वे दम तोड़ रहीं हैं। प्लास्टिक का सामान नॉन बायोडिग्रेडेबल होता है यानि वह कभी खत्म नहीं हो सकता न मिट्टी में न पानी में। हम जब प्लास्टिक को फेंकते हैं तो वह हमारे पर्यावरण में पड़ा रहता है। प्लास्टिक से बना टूथब्रश भी एक ऐसा ही ख़तरा है- यह टूट जाता है लेकिन कभी खत्म नहीं होता और फिर छोटे-छोटे कण बनकर हमारी नदियों और समुद्र में पहुंच जाता है। कभी कछुए तो कभी मछलियां और दूसरे पानी के प्राणी इसे खा लेते हैं। यहां तक की समुद्र के पानी से बने नमक में भी प्लास्टिक कण मिल रहे हैं जो हमारे पेट तक भी पहुंच जाते हैं। सिर्फ यही नहीं समुद्र के सबसे गहराई वाली जगह में भी प्लास्टिक पहुंच गया है। पेसेफिक सागर का मरियाना ट्रेंच सबसे गहरी जगह है, 36,000 फुट नीचे। अमरीकी एक्सप्लोरर विक्टर वेस्कोवो ने वहां की तस्वीरें जब साझा की तो चॉकलेट के रैपर और प्लास्टिक के बैग्स तैरते हुए दिखे। तो अगर हम चाहते हैं कि हमारा पर्यावरण साफ रहे ताकि केवल जीव-जंतु ही नहीं मैं और तुम भी स्वस्थ और सुरक्षित रहें तो इसके लिए कुछ बदलाव लाने होंगे ताकि सभी को जीने का मौका मिले।''

ऋषि ने सवाल किया- ''लेकिन मम्मा एक मेरे टूथब्रश बदलने से क्या होगा?''

मम्मी ने कहा- ''ऋषि मैं मानती हूं कि यह छोटी कोशिश है लेकिन एक शुरुआत तो होगी। अगर हम सब यहीं सोचकर बैठ जाएंगे कि हमारे एक से क्या होगा तब तो कोई कुछ करेगा ही नहीं। इसलिए जो इस समस्या के बारे में जानते हैं, कम से कम वे तो कदम उठाएं। केवल टूथब्रश ही नहीं ऋषि हमें अपने ज़िंदगी में कई और बदलाव करने होंगे और मुझे लगा कि इसकी शुरुआत अभी इसलिए करनी चाहिए क्योंकि एक महीने यानि 19 नवंबर से 18 दिसंबर तक विश्व पर्यावरण माह मनाया जाता है और इसका मकसद है कि लोगों को प्रकृति के बारे में जागरूक किया जाए, तो क्यों न तुम भी यह बीड़ा उठाओ। मैं तुम्हें एक टास्क देने वाली हूं।''

''वैसे मम्मा ये पर्यावरण माह इसी महीने क्यों मनाया जाता है?'' - ऋषि ने पूछा।

मम्मी ने समझाया- ''विश्व पर्यावरण माह इसी महीने मनाया जाता है क्योंकि 1986 में इसी

दिन यानि 19 नवंबर को पर्यावरण संरक्षण कानून को लागू किया गया। पर्यावरण के बचाव के लिए क्या कदम उठाएं जाएं? उससे जुड़े सारे नियम-कायदों को लागू कैसे किया जाए? इन सब की शुरुआत इसी दिन हुई थी। एक महीने तक चलने वाले पर्यावरण माह की थीम है 'प्रकृति के साथ समय'। यानि आप प्रकृति के साथ कुछ समय बिताइए और सुधार के लिए सोचें।''

''तो ऋषि मेरी योजना यह है कि तुम अपने 5 दोस्तों को बैंबू यानि लकड़ी के टूथब्रश के बारे में बताओ और कैसे प्लास्टिक हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही है इसकी जानकारी अपने दोस्तों को दो। ये बैंबूब्रश जब खराब होगा तो मिट्टी में मिल जाएगा। इससे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। अपने पांच दोस्तों को आग्रह करो कि वे भी अपने घर में इस्तेमाल किए जाने वाले प्लास्टिक टूथब्रश को बदलें। फिर ये पांच दोस्त अपनी कॉलोनी या सोसायटी में पांच और बच्चों को भी समझाएं, फिर वे पांच बच्चे अपने पांच और दोस्तों को बताएं। हम इस तरह से एक छोटी सी कड़ी शुरू कर सकते हैं। पांच में से अगर दो बच्चे और उनके परिवार अपने प्लास्टिक टूथब्रश को बदल दें तो पर्यावरण के लिए कितना अच्छा होगा। वैसे अगर ये टूथब्रश न भी बदलें लेकिन पर्यावरण के बारे में कुछ क्षणों के लिए ही सही कम से कम सोचेंगे ज़रा।''

ऋषि को ये आईडिया अच्छा लगा। मन ही मन वह सोच रहा था कि कौन से वो पांच दोस्त होंगे जिन्हें वह इस चेन में शामिल कर सकता है। तभी दरवाज़े की घंटी बजी और घर में काम करने वाली सुमन आंटी आई। सुमन आंटी को हाथ में एक झोला था जो उन्होंने मम्मी को पकड़ा दिया। मम्मी ने गिनना शुरू किया। सुमन आंटी जो झोला लाई थी उसके अंदर सात और कपड़े के झोलानुमा बैग थे। सुमन आंटी सिलाई का काम करती थी और मम्मी उन्हें सिलाई-मरम्मत का काम देती रहती थीं। मम्मी ने बताया कि वह अब घर का सामान खरीदने जब जाएंगी तो इन कपड़ों के बैग में ही सामान लाएंगी। ऋषि ने पूछा- ''लेकिन क्या आपको सात झोलों की ज़रूरत है।''

मम्मी ने बताया कि वो एक रखेंगी और बाकी के 6 वह अपने दोस्तों के देने वाली हैं इस आग्रह के साथ कि प्लास्टिक के बैग की जगह इन ईको फ्रेंडली कपड़े के बैग का इस्तेमाल करें जिसे धोकर बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता है। तो मम्मी ने केवल ऋषि को ही ये टास्क नहीं दिया था बल्कि खुद भी कपड़ों के बैग और टूथब्रश के ज़रिए पर्यावरण बचाने का संदेश अपने दोस्तों को देने की तैयारी में थी। ❑

खुशियों के दीप

–सावित्री चौधरी

रेणु प्रसन्नता से घर में उछलकूद रही थी। दीवाली अब दूर नहीं है। जी भर आतिशबाजी करने के लिए वह कई दिनों से अपने जेब खर्च के रुपये गुल्लक में जमा कर रही थी। एक दिन चुपके से रुपये निकाल कर गिने। पूरे पांच सौ पचास थे। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह दीवाली पर कई तरह के पटाखे छुड़ाकर अपनी सहेलियों पर धाक जमाना चाहती थी।

दीवाली में सिर्फ दो दिन बाकी थे। एक दिन रेणु रोजाना की तरह स्कूल से घर पहुंची, तो देखा कि बगीचे में माली के बजाय उसकी आठ वर्षीय बेटी मंगली पेड़ों में पानी दे रही थी। धूप के कारण उसका चेहरा मुरझा रहा था और उसने पुरानी घिसी हुई फ्रॉक पहन रखी थी। रेणु ने पूछा, ''मंगली, आज तुम्हारा बापू क्यों नहीं आया?''

''दीदी, मेरा बापू दमे के कारण बहुत बीमार हो रहा है।'' उसने दुःखी स्वर से बताया।

''फिर तुम यहां क्यों आई? बापू को लेकर डॉक्टर के पास जाना चाहिए था।'' रेणु ने कहा। ''मैं कैसे जाती, दीदी? घर में तो एक पैसा भी नहीं है।'' मंगली ने रुंआसे स्वर में जवाब दिया। उसकी मां, दो छोटी लड़कियां छोड़कर चल बसी थी। उसका बापू भी दमे का रोगी था। वह कॉलोनी के बगीचों की देखभाल की थोड़ी-सी कमाई से किसी तरह अपनी दोनों बेटियों का और अपना भरण-पोषण करता था।

रेणु को मंगली का जवाब सुनकर बड़ा दुःख हुआ। रात को उसने सपने में देखा कि मंगली का बापू बिना दवा के मर गया

है। सारी कॉलोनी दीपों से जगमगा रही है, पर मंगली की कोठरी तो अंधरे में डूबी हुई है। वह और उसकी छोटी बहन कोठरी के बाहर बैठी बिलख-बिलखकर रो रही हैं।

इस दु:खदायी सपने से रेणु की नींद उड़ गई। उसने सुबह उठते ही प्रण किया कि वह गुल्लक में जमा रुपयों से मंगली के बापू का इलाज करवाएगी। फिर उसने गुल्लक से सारे रुपये निकाले और नहा-धो, नाश्ता कर मंगली की कोठरी की ओर चल दी।

मंगली दवा लिखी पर्ची हाथ में थामे बापू की खटिया के पास बैठी रो रही थी। रेणु ने उसे प्यार से धीरज बंधाया और उसके हाथ से दवा लिखी पर्ची लेकर एक दवा विक्रेता की दुकान पर गई। पर्ची में लिखी दवाइयों का मूल्य दो सौ रुपये चुकाने के बाद, बाकी बचे हुए तीन सौ पचास रुपयों में से सौ रुपये के फल, बिस्किट और दूध लिया।

फिर रेणु लपकती हुई मंगली की कोठरी पर जा पहुंची और उसने समझाया कि बापू को पहले थोड़ा दूध और बिस्किट खिला-पिलाकर कैसे दवाइयां देनी हैं व कुछ देर बाद फल भी खिलाने हैं। बाकी बचे सौ रुपये भी मंगली को थमाते हुए रेणु ने कहा, ''इन रुपयों से तुम लक्ष्मी पूजा का सामान ले आना और अपनी जरूरत के अनुसार खर्च कर लेना।''

''दीदी, तुम कितनी अच्छी, कितनी दयालु हो।'' यह कहते हुए मंगली की आंखें कृतज्ञता से बरसने लगी। ''अब तुम रोओ मत। तुम्हारा बापू आज ही अच्छा हो जाएगा।'' रेणु ने बड़े स्नेह से उसके आंसू पोंछते हुए कहा, ''परसों दीवाली है। तुम अपनी बहन और बापू के साथ हमारे घर जरूर आ जाना। फिर हम सब मिलकर दीए जलाएंगे, पटाखे छोड़ेंगे।''

दीवाली के दिन हर एक के चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए थे। सुबह जब रेणु उठी, तो देखा कि मां और पिताजी आंगन में बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। उसने उन्हें प्रणाम किया।

मां और पिताजी ने शाबासी से उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, ''बिटिया, तुमने तो बताया नहीं, पर हमें मंगली के बापू ने सब बता दिया है। आज तुम सच्चे अर्थ में दीवाली मनाओगी। दीवाली का मतलब ही है- सबके जीवन में खुशियां लाना, आशाओं का संचार करना और खुशियों के दीप जलाना। आज हमें तुम पर गर्व है- बेटी।'' ❑

रास्ता ढूंढो

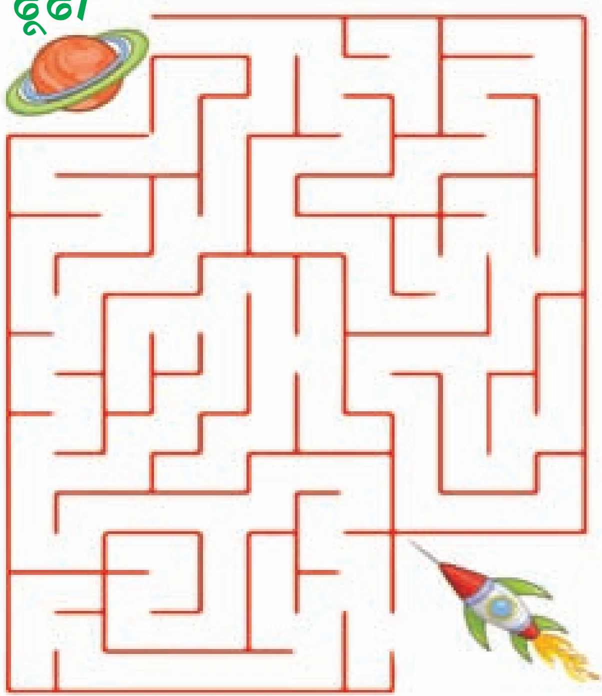

–पूजा रानी, सी-8ए, चंदर विहार, दिल्ली

रामू की सेल्फी

–कुसुम अग्रवाल

उछलते-कूदते बच्चों की टोली गांव की धर्मशाला में पहुंच गई। उनका आज का यहीं अड्डा जमाने का इरादा था। रामू, जो इन सबमें से बड़ा था, वही इस टोली का लीडर था।

''चलो, हम सब बरामदे में जाकर बैठते हैं। वहां चारपाई भी लगी है। उसी पर बैठकर अंताक्षरी खेलते हैं।'' उसने कहा।

पर दीपू को अंताक्षरी खेलने में कोई रुचि नहीं थी। वह मुंह चढ़ा कर बोला, ''नहीं, नहीं, अंताक्षरी में कुछ मजा नहीं आता। मुनिया और बबलू तो छोटे हैं। इनको तो गाने-वाने कुछ नहीं आते हैं। हम कुछ और खेलते हैं।

''ठीक है छुपन-छिपाई खेलते हैं'' रामू ने कहा। यह सुनकर सभी चहक उठे।

''हां, यह ठीक रहेगा।'' सब एक साथ मिलकर बोले और फिर सब मिलकर वहीं छुपन-छिपाई खेलने लगे।

सबको बड़ा मजा आ रहा था। अब की बार दीपू की डैन थी। सब छिपने के लिए भागे।

कहां छुपूं? कहां छुपूं? रामू बहुत असमंजस में था कि उसने देखा- धर्मशाला के कोने वाला

एक कमरा खुला है। शायद वह अभी-अभी खाली हुआ था। रामू धर्मशाला के उसी कमरे में गया।

कमरे में घुस कर वह पलंग के नीचे छिपने ही वाला था कि अचानक से उसकी नजर पलंग पर पड़ी। पलंग पर एक मोबाइल पड़ा था।

"अरे वाह! मोबाइल। लगता है इसे किसी ने भूल से यहां छोड़ दिया है। वह मोबाइल को उलट-पुलट कर देखने लगा।

रामू एक साधारण घर से था। उसके पापा के पास मोबाइल तो था परंतु वह बहुत ही साधारण सा था। यह मोबाइल बहुत अच्छा था।

"मैं इसे अपने पास रख लूंगा। किसी को नहीं बताऊंगा। आजकल सब मोबाइल में वीडियो गेम खेलते हैं। मेरे पापा के मोबाइल में तो कुछ भी नहीं है। इसमें सब कुछ होगा क्योंकि यह बहुत महंगा दिखता है।"

अभी रामू यह सोच ही रहा था कि उसे ढूंढते-ढूंढते दीपू उसके कमरे में आया और उसे देखते ही बोला, "ढूंढ लिया। ढूंढ लिया। अच्छा तो बच्चू इस कमरे में छिपा बैठा है।" और यह बोलते-बोलते उसकी नजर रामू के हाथों पर पड़ी। मोबाइल देखते ही वह चौंका और बोला, "मोबाइल कहां से मिला तुझे?" रामू ने उसे चुप रहने का इशारा किया और धीरे से बोला, "चुप रह। बोल मत। नहीं तो किसी को पता चल जाएगा और वह हमसे मोबाइल ले लेगा। चल यहां से चलते हैं।" यह कहकर वह मोबाइल को जेब में डालकर धर्मशाला से बाहर निकल गया और उसके पीछे-पीछे उसकी टोली भी।

"भैया रामू, जरा मोबाइल तो दिखाना", मुनिया ने कहा।

"नहीं यहां नहीं। कोई देख लेगा। चल एक ओर चलते हैं।" यह कह कर रामू सभी बच्चों को गांव के सुनसान इलाके की ओर ले गया। वहां बैठकर उन्होंने बहुत देर तक मोबाइल को उलट-पुलट कर देखा। मोबाइल तो लॉक था परंतु उस मोबाइल में कैमरा स्क्रीन के ऊपर ही था। जब उसने उस स्क्रीन वाले कैमरे को छुआ तो मोबाइल के आगे का कैमरा चालू हो गया। रामू ने कई लोगों को मोबाइल से सेल्फी लेते देखा था। अतः उसने झट से अपनी सेल्फी खींच ली।

"हमारी भी फोटो खींचो ना।" कहकर सब बच्चों ने शोर मचाना शुरू कर दिया।

"यहां नहीं। किसी अच्छी जगह पर खींचेंगे। अब तो यह मोबाइल-कैमरा हमारे पास ही रहेगा। देखना मैं मोबाइल की दुकान पर जाकर इसे खुलवा भी लूंगा। फिर हम सब मिलकर इसमें खेल भी खेलेंगे।" रामू ने कहा और वह बच्चों को लेकर किसी ऐसी जगह की तलाश में घूमने लगा जहां वह सबके साथ सुंदर सेल्फी ले सकता था।

घूमते-घूमते वह बस अड्डे पर पहुंच गया।

बस अड्डे पर एक बस में बहुत सारे बच्चे बैठ रहे थे। शायद यह गांव घूमने आए थे। उन्हीं बच्चों के साथ एक शिक्षक भी थे।

रामू ने देखा-सुना वह शिक्षक कुछ परेशान से लग रहे थे और बस में बैठते-बैठते ड्राइवर से कुछ कह रहे थे।

रामू ने सुना, वह कह रहे थे, "ड्राइवर भैया, मैंने तुम्हें एक फोन नंबर दिया है। तुम तो यहीं वापस आओगे। यदि तुम्हें किसी से मेरे मोबाइल की खबर मिले तो मुझे उसी नंबर पर मुझे बताना। पता नहीं कहां रह गया। मैंने उस पर तीन-चार बार घंटी भी की पर कोई जवाब नहीं आया। शायद साइलेंट पर था इसलिए।

शिक्षक की बात सुनकर ड्राइवर हंसकर बोला, "अरे! साहब मोबाइल की क्या चिंता

करते हो। ये तो खोते ही रहते हैं। नया ले लेना।''

इस पर वह शिक्षक बोले, ''बात केवल मोबाइल की नहीं है। उस मोबाइल में मैंने बहुत सी जरूरी सूचनाएं, सारे फोन नंबर और कई जगहों के पते भी नोट कर रखे थे। और तो और हमारी सबके आगे के सफर की टिकटें, होटल बुकिंग्स आदि भी उसी मोबाइल में ही थीं। उसके बिना मुझे बहुत दिक्कत होगी।

उन शिक्षक की बात सुनकर रामू समझ गया कि उसे जो मोबाइल मिला है इन्हीं का है और यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे इनका मोबाइल लौटा देना चाहिए। पर तत्क्षण ही उसका मन बदल गया और उसने फिर सोचा- मैंने कौन सा चोरी की है? यह मोबाइल तो मुझे मिला है। इनकी मुश्किल का तो और कोई रास्ता निकल भी आएगा मगर मेरे हाथ से मोबाइल निकलने के बाद मुझे दोबारा इतनी आसानी से कोई मोबाइल नहीं मिलेगा। इसलिए मुझे यह मोबाइल नहीं लौटाना चाहिए।

पर फिर उसके मन में ख्याल आया- यह शिक्षक और उनके साथ आए बच्चे हमारे गांव के मेहमान हैं और हमारी संस्कृति हमें अपने मेहमानों की मेहमान नवाज़ी करना सिखाती है, ना कि उनको कोई नुकसान पहुंचाना। जब यह पता चल ही गया कि यह मोबाइल इनका है तो मुझे यह मोबाइल लौटाना ही चाहिए। वरना यह चोरी ही कहलाएगी।

यह सोचकर वह उन शिक्षक के पास गया और अपनी जेब में से मोबाइल निकाल कर उन्हें दिखाते हुए बोला, ''कहीं आपका मोबाइल यह तो नहीं है?''

मोबाइल देखते ही उन शिक्षक की खुशी का ठिकाना ना रहा। वे बोले, 'हां यही तो है। कौन हो तुम? ये कहां मिला तुम्हें?

''मैं रामू हूं। यह मुझे धर्मशाला के कमरे में मिला। हम वहां खेल रहे थे।'' रामू ने कहा।

शिक्षक ने रामू को गले से लगा लिया और बोले, ''रामू, तुम्हें नहीं पता तुमने मेरा मोबाइल मुझे वापस देकर मुझ पर कितना बड़ा एहसान किया है। मैं तुम्हें इसके बदले कुछ इनाम देना चाहता हूं यह कहकर उन्होंने अपनी जेब में से रुपये निकाले और रामू को देने चाहे परंतु रामू ने रुपये लेने से मना कर दिया और कहा, 'नहीं रहने दीजिए। अभी आपको आगे सफर करना है, आपके काम आएंगे।''

यह कहकर रामू वहां से चला गया और उसके पीछे-पीछे उसकी टोली भी।

''भैया हमारी सेल्फी तो रह ही गई।'' नन्हीं मुनिया ने रामू से कहा।

''ले अभी खींच देता हूं।'' यह कहकर रामू ने अपने चप्पल उतारी और उसे मोबाइल की तरह अपने सामने कर लिया मानो सेल्फी ले रहा हो। सभी बच्चे भी मुस्कुरा कर सेल्फी देने के पोज में खड़े हो गए। फिर सभी हंसते-हंसते अपने घर चले गए।

''अरे रामू देख तेरी फोटो अखबार में छपी है।'' एक दिन सुबह-सुबह रामू के पापा ने उसे अखबार दिखाते हुए कहा।

रामू ने अपने पापा के हाथ से अखबार लिया। सचमुच अखबार में उसकी फोटो थी। यह वही सेल्फी वाली फोटो थी जो उसने उस दिन शिक्षक के मोबाइल से ली थी। फोटो के ऊपर लिखा था- ईमानदार बालक और नीचे उसका और उसके गांव का नाम के साथ-साथ सारी घटना का जिक्र भी किया गया था।

यह देखकर रामू का सीना गर्व से चौड़ा हो गया और वह अखबार लेकर बाहर भागा। अखबार में छपी अपनी सेल्फी अपनी टोली को दिखाने के लिए। ❑

गुणकारी मेथी

■शैल नीरद

उम्र बढ़ने के साथ-साथ जोड़ों में सूजन होने लगती है, जिस कारण असहनीय दर्द हो सकता है। इसे जोड़ों का दर्द या फिर ऑर्थराइटिस कहा जाता है। मेथी में एंटीइंफ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं। ये गुणकारी तत्व जोड़ों की सूजन को कम करके आर्थराइटिस के दर्द से राहत दिलाने में मदद करते हैं। मेथी में आयरन, कैल्शियम और फास्फोरस भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसलिए, मेथी के औषधीय गुण से हड्डियों व जोड़ों को जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं।
हृदय बेहतर तरीके से काम कर सके, उसके लिए मेथी का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। जो लोग नियमित रूप से मेथी का सेवन करते हैं, उन्हें दिल का दौरा पड़ने की आशंका कम हो सकती है। जब हृदय की धमनियों में रुकावट आ जाती है, वहीं मेथी के दाने इस स्थिति से बचाने में सक्षम हो सकते हैं।
मेथी के औषधीय गुण उच्च रक्तचाप की समस्या को कम करने में मदद कर सकते हैं। एक वैज्ञानिक शोध के मुताबिक, मेथी में एंटीहाइपरटेंसिव प्रभाव पाया जाता है, जो रक्तचाप की समस्या को कम कर सकता है। किडनी के लिए भी मेथी फायदेमंद है। मेथी के दानों में पॉलीफेनोलिक फ्लेवोनोइड पाया जाता है, जो किडनी को बेहतर तरीके से काम करने में मदद करता है। साथ ही यह किडनी के आसपास एक रक्षा कवच का निर्माण करता है, जिससे इसके सेल नष्ट होने से बच जा सकते हैं।
अगर कोई वजन कम करना चाहता है, तो इसके लिए मेथी का उपयोग सहायक सिद्ध हो सकता है। दरअसल, मेथी शरीर में वसा को जमा होने से रोकने का काम कर सकती है। इसमें रेशे की अच्छी मात्रा पाई जाती है, जो आहार को पचाने के साथ ही भूख को शांत रखने का काम कर सकता है। इससे वजन को बढ़ने से रोका जा सकता है।
मेथी को त्वचा के लिए भी लाभकारी माना जा सकता है। मेथी में एंटीऑक्सीडेंट, झुर्रियों से बचाव, चेहरे पर नमी और त्वचा को मुलायम रखने के गुण पाए जाते हैं। इसलिए मेथी के लाभ त्वचा पर नजर आ सकते हैं। मेथी के उपयोग से बालों का झड़ना भी रुक सकता है। मेथी के बीज में प्रोटीन के भरपूर मात्रा पाई जाती है, जो बालों के लिए जरूरी होता है। इससे गंजेपन, और बालों के झड़ने का इलाज करने में मदद मिल सकती है।
सुना बच्चो! इतनी है गुणकारी मेथी!
मैं तो इसे रसोई में सदा रखती हूं और भोजन बनाने में उपयोग भी करती हूं बच्चो!
जी दादा जी! अब हम भी इसका सेवन करेंगे।
समाप्त

बिट्टू राजा हठ कर बैठे

–किरण सिंह

बिट्टू राजा हठ कर बैठे रोनी शक्ल बना के।
चलो दीवाली में दिलवा दो मम्मी मुझे पटाखे।

मम्मी बोलीं बिट्टू राजा समझो बात हमारी।
फोड़ोगे तुम अगर पटाखे बहुत पड़ेगा भारी।

रूठ गए फिर बिट्टू राजा खाना-पीना छोड़ दिए।
जो थे उनके खेल-खिलौने वे भी सारे तोड़ दिए।

पापा लाए नए खिलौने बोले बिट्टू मानो।
बड़े हो गए बेटा तुम भी दुनियादारी जानो।

पर न माने बिट्टू राजा बोले मुंह बिचकाकर।
पहले पापा सभी पटाखे मुझे दीजिए लाकर।

तभी आ गए बिट्टू के भैया लगे उनको समझाने।
जला हाथ दिखाकर अपना दर्द लगे बताने।

गगन में धुआं दिखाकर बोले देखो छोटे भाई।
नहीं पटाखे फोड़ूंगा अब मैंने कसम है खाई।

मान गए फिर बिट्टू राजा खाने लगे मिठाई।
फिर घर की मम्मी-पापा संग करने लगे सफाई।

मिट्टी के दीयों से बिट्टू घर को लगे सजाने।
हुआ गगन ज्यों जगमग-जगमग लगा उन्हें भी भाने।

जोर-जोर से सारे बच्चे लगे लगाने नारा।
हार गया अंधियारा फिर से जय जय जय उजियारा।

नए ग्राहक बनने/सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की सूचना के लिए कूपन

मैं बाल भारती

- ❑ ₹ 160 में एक वर्ष
- ❑ ₹ 300 में दो वर्ष
- ❑ ₹ 420 में तीन वर्ष
- ❑ विशेषांक : ₹ 20

के लिए मंगाना चाहता/चाहती हूं। मैं उचित राशि का डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं................दिनांक............भेज रहा हूं/रही हूं।
(उचित बॉक्स पर निशान लगाएं)

- मेरी वर्तमान सदस्यता ....महीने में समाप्त हो रही है। सदस्यता के नवीकरण के लिए एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष का शुल्क ऊपर दिए विवरण के अनुसार भेज रहा/रही हूं।
- मेरा पता बदल गया है। कृपया अब पत्रिका नीचे दिए पते पर भेजें।

(जो पंक्तियां लागू न हों, उन्हें काट दें)

हस्ताक्षर...............................

नाम..

पता..

....

....

मोबाइल नं. ....

ई-मेल आईडी : ....

वर्ग : विद्यार्थी/शिक्षक/संस्था/अन्य

सदस्यता के नवीकरण/पता बदलने की स्थिति में बॉक्स में अपनी सदस्यता संख्या लिखें....

- डिमांड ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर **अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय** के नाम सदस्यता कूपन के साथ निम्न पते पर भेजें :

विज्ञापन तथा प्रसार व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग,
कमरा संख्या 48-53, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड नई दिल्ली-110003

- पत्रिका मंगाने के लिए आप अपने समाचार पत्र विक्रेता से भी संपर्क कर सकते हैं।

विक्रय केंद्र : प्रकाशन विभाग

नई दिल्ली : सूचना भवन, सी.जी.ओ. कांप्लेक्स, लोदी रोड, दूरभाष : 011-24367260, **लखनऊ** : हाल नं. 1, दूसरी मंजिल, केंद्रीय भवन, अलीगंज, दूरभाष : 0522-2225455, **कोलकाता** : 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, दूरभाष : 33-22488030, **पटना** : बिहार रा. सह. बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, दूरभाष : 0612-2683407, **मुंबई** : 701 बी-विंग, सातवीं मंजिल, केंद्रीय सदन बेलापुर, नवीं मुंबई, दूरभाष : 9522-27570686, **बंगलुरू** : एफ विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला दूरभाष: 080-25537244, **हैदराबाद** : कमरा नं. 204, द्वितीय तल, सी.जी.ओ. टॉवर्स, कावादि गुडा-500080, **चेन्नई** : राजाजी भवन, बेसेंट नगर, दूरभाष : 044-24917673, **तिरुअनंतपुरम** : गवर्मेंट प्रेस के निकट, दूरभाष : 041-2330650,

हमारी पत्रिकाएं

योजना
विकास को समर्पित मासिक
(हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू व 10 अन्य भारतीय भाषाओं में)

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कुरुक्षेत्र
ग्रामीण विकास पर मासिक
(हिंदी और अंग्रेजी)

आजकल
साहित्य एवं संस्कृति का मासिक
(हिंदी तथा उर्दू)

रोज़गार समाचार
साप्ताहिक
(हिंदी, अंग्रेजी तथा उर्दू)

बाल भारती
बच्चों की मासिक पत्रिका
(हिंदी)

घर पर हमारी पत्रिकाएं मंगाना है काफी आसान...

आपको सिर्फ नीचे दिए गए 'भारत कोश' के लिंक पर जा कर पत्रिका के लिए ऑनलाइन डिजिटल भुगतान करना है–
https://bharatkosh.gov.in/Product/Product

आप 'अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय' के पक्ष में नई दिल्ली में देय डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर से सदस्यता दरों एवं प्लान के अनुसार निर्धारित राशि भेज सकते हैं।

भेजने का पता है– संपादक, पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कक्ष सं. 56, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

अपने डीडी, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर के साथ नीचे दिया गया 'सदस्यता कूपन' या उसकी फोटो कॉपी में सभी विवरण भरकर हमें भेजें।

अधिक जानकारी के लिए ईमेल करें– **pdjucir@gmail.com**

हमसे संपर्क करें – फोन: 011-24367453, (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

सदस्यता दरें

प्लान	योजना, कुरुक्षेत्र, आजकल (सभी भाषा)		बाल भारती		रोज़गार समाचार*	
वर्ष	साधारण डाक	रजिस्टर्ड डाक	साधारण डाक	रजिस्टर्ड डाक	छपी हुई प्रति	ई-संस्करण
1	₹ 230	₹ 434	₹ 160	₹ 364	₹ 530	₹ 400
2	₹ 430	₹ 838	₹ 300	₹ 708	₹ 1000	₹ 750
3	₹ 610	₹ 1222	₹ 420	₹ 1032	₹ 1400	₹ 1050

* रोज़गार समाचार की 6 माह की सदस्यता भी उपलब्ध, प्रिंट संस्करण रु. 265, ई-संस्करण रु. 200/-, कृपया ऑनलाइन भुगतान के लिए https://eneversion.nic.in/membership/login लिंक पर जाएं। डीडी 'Employment News' के पक्ष में, रोज़गार समाचार, 7वां तल, सर्कुलेशन सेक्शन, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 के पते पर भेजें।

कृपया नोट करें कि पत्रिका भेजने में, सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद कम से कम आठ सप्ताह लगते हैं, कृपया इतने समय प्रतीक्षा करें और पत्रिका न मिलने की शिकायत इस अवधि के बाद करें।

सदस्यता कूपन (नई सदस्यता/नवीकरण/पते में परिवर्तन)

कृपया मुझे 1/2/3 वर्ष के प्लान के तहत .... पत्रिका .... भाषा में भेजें।

नाम (साफ व बड़े अक्षरों में) ....

पता : ....

.... जिला .... पिन ....

ईमेल .... मोबाइल नं. ....

डीडी/पीओ/एमओ सं. .... दिनांक .... सदस्यता सं. ....

वार्षिक मूल्य : ₹ 160
आर एन आई 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी एल (एस) – 05/3214/2018–20
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डी एन)–51/2018–20
08 अक्टूबर, 2020 को प्रकाशित • 18–19 अक्टूबर 2020 को डाक द्वारा जारी

RNI 699/57
Postal Regd. No. DL (S) - 05/3214/2018-20
Licenced U (DN) - 51/2018-20
to post without pre-payment at RMS Delhi

प्रकाशक व मुद्रक : मोनीदीपा एम. मुखर्जी, महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
मुद्रक : मल्टी कलर सर्विसेज, 92 डीएसआईडीसी सेड, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेस–1, नई दिल्ली–110020 वरिष्ठ संपादक : आभा गौड़